रपट

हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा

नाम:- तन्वी तुकाराम गांवकर

अनुक्रमांक:- 23P0140033

PR. Number:- 202009961

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाखा

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

15/20

3/05/24

परीक्षक: दीपक वरक

श्वेता गोवेकर

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU GOA

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

अनुक्रमणिका

अनु क्र.	दिन	विषय
१.		प्रस्तावना
२.		टूर पर जाने की पूर्व प्रक्रिया
३.		टूर का सफ़र
४.	पहला दिन	अक्षरधाम मंदिर
५.	दूसरा दिन	इंडिया गेट
६.		ललित कला अकादमी
७.		लोटस टेंपल
८.		हुमायुं का मकबरा
९.		लक्ष्मीनारायण/बिड़ला मंदिर
१०.	तीसरा दिन	दिल्ली विश्वविद्यालय
११.		हिंदू कॉलेज
१२.		जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
१३.		कुतुब मीनार
१४.	चौथा दिन	ताजमहल
१५.		मथुरा
१६.		वृंदावन
१७.	पाँचवा दिन	उग्रसेन की बावली
१८.		राष्ट्रीय बाल भवन
१९.		राजघाट
२०.		जामा मस्जिद
२१.		लाल किल्ला
२२.		सरोजिनी नगर
२३.		निष्कर्ष

प्रस्तावना

शैक्षिक भ्रमण का शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष महत्व है। शैक्षिक भ्रमण से हम प्रकृति की सुन्दरता से रुबू-रु होते हैं। मानव की सुन्दर कलाकृतियों से परिचित होते हैं, साथ ही साथ कुदरत की कुछ रहस्यों से भी परिचित होते हैं जिसमें हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है। शैक्षिक भ्रमण में हम परोक्ष नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं, जिससे ज्ञान स्थायी होते हैं, साथ ही रासानुभूति की प्राप्ति होती है और नयन सुख की प्राप्ति होती है। यह मनोरंजन के माध्यम से सीखना शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम है।

हमारे विश्वविद्यालय से भी हम एम. ए. प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राएँ लगभग एक सप्ताह के लिए दिनांक १८ मार्च २०२४ से २६ मार्च २०२४ को हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा हेतु दिल्ली, अक्षरधाम मन्दिर, इंडिया गेट, ललित कला अकादमी, लोट्स टैंपल, हुमायूँ का मकबरा, बिड़ला मन्दिर, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदू कॉलेज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, कुतुबमीनार, ताजमहल, मथुरा, वृंदावन, उग्रसेन की बावली, राष्ट्रिय बाल भवन, राजघाट, जमा मस्जिद, लालकिल्ला और सरोजिनी।

टूर पर जाने की पूर्व प्रक्रिया

मैं तन्वी गांवकर, एम. ए. हिंदी पार्ट १ की विद्यार्थी हूँ। हमें दूसरे सेमेस्टर में कुल ६ पेपर है। जिसमें दो पेपर में हमें विकल्प था जिसमे हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा और भाषा और साहित्य: सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेषण। २६ छात्रों ने हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा को चुना।

हमारे डॉ. बिपिन तिवारी सर ने हमें जगहों के बारे में सूचना दी। और उसी दिन से हम तैयारी मे लग गये। दीपक सर ने हम सब बच्चों से अंडरटेकिंग लिखकर ले लिया और हम सब विद्यार्थीयों से ट्रेन के टिकट के लिए २१०० रुपये लिए थे। इसके बाद हमारी टूर पर जाने की तारीख चुन ली गई। कुछ विद्यार्थियों ने और सर दीपक जी ने जाकर १४ फरवरी २०२४ की टिकट निकाली। लेकिन इमरजेंसी के कारण इस दिन जाना संभव नहीं हुआ तो सर दीपक और विद्यार्थियों ने फिर से जाकर टिकट को रीशेड्यूल किया और १८ मार्च २०२४ की टिकट निकाली। इस तारीख के हिसाब से हमने तैयारी करना शुरू की।

टूर पर जाने से पूर्व हमें बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जैसे कि हमारे साथ बिपिन तिवारी सर आने वाले थे लेकिन कुछ इमरजेंसी के कारण उनका आना असंभव हो गया और उनके स्थान पर श्वेता मैम को आना पड़ा। एक यात्रा के लिए जिन चीजों की सहायता होती हैं वे सब चीजे हमने बेग में पैक कर दी जैसे सुबह उठने के बाद टूथब्रश से लेकर कपड़े, साबुन, बरतन आदि को बैग में पैक किया और उसके साथ हमारी आय. ड. और कॉलेज की आय. डी. भी ले ली । इस तरह से टूर जाने की हमारी पूर्व प्रक्रिया रही है।

ट्रेन का सफर

हम लोगों का हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा १८ मार्च २०२४ को, दोपहर ३:४० को ट्रेन थी। लेकिन हम सब स्टेशन पर २:३० तक पहुँचने के लिए कहा था। वहाँ पहुंचने के बाद सर्वप्रथम हम सब की उपस्थिति सर दीपक द्वारा ली गई। ट्रेन ५:०० बजे आयी थी। तो इसके बीच हमें बहुत देर तक रुकना पड़ा। के बीच हम लोगों ने वहाँ स्टेशन पर चाय ली और हम सबने ग्रुप फोटो निकालें और ऐसा करते करते ट्रेन आ गई। ट्रेन आते ही हम सब अपना अपना सामान लेकर ट्रेन में पहुंचे और सब अपने अपने सीट पर बैठ गये। इसके बाद सर ने पुन: सब की उपस्थिति ली। हम सब विद्यार्थी और शिक्षक, शिक्षिका मिलकर ३० थे।

ट्रेन के लिए जब हम ट्रेन में पहुँच गए तो हम सब ने अपना अपना सामान रख दिया और एक दूसरे से बात करने लगे। ट्रेन में हम लोगो ने बहुत मस्ती की जैसे कि दीपक सर श्वेता मैम और हम विद्यार्थी

मिलकर ट्रेन में एक साथ पत्तों से खेले, गाना गाए, बहुत सारी मौज मस्ती की। श्वेता मैम के साथ उनका छोटा बेटा भी आया था जिसका नाम था रेयांश। रेयांश के साथ भी हम लोगो ने बहुत सारी मस्ती की। और बाद मे सो गए। अगले दिन मैंने उठकर ब्रश किया और बाद में ट्रेन की कॉफी का मज़ा लिया। उसके बाद हम दोस्तों ने एक साथ बैठकर बहुत गप्पे शप्पे लगाए। रात को फिर से खाना खाकर सो गए और तीसरे दिन सुबह ५:३० बजे दिल्ली स्टेशन पर पहुंचे वहाँ बहुत ठंड थी। और यहीं पर हमारा ट्रेन का सफर समाप्त होता है।

दिल्ली स्टेशन पर पहुंचने के बाद हमें दो बार मेट्रो के टिकट निकालकर जाना पड़ा। हमें वहीं स्टेशन पर रुकने के लिए कहकर सर होटल देखने के लिए गए हम विद्यार्थि और श्वेता मैम वही पर इंतजार करने लगी। बाद में हम सब सामान लेकर चलकर बाहर गए। बाहर खडे होकर सर का आने क इंतजार कर रहे थे। लेकिन उस समय वहाँ के लोग हमें गंदी नजर से देख रहे थे। कुछ समय बाद दीपक सर लौट आए और हम सब ऑटो में बैठकर ज्योति महल गये। जहाँ हमारी रहने की व्यवस्था की थी। होटल का नाम था ज्योति मेहल। होटल में पहुंचने के बाद हमारी चेकिंग हुई। हमें जो रूम मिला था उस रूम का नंबर १०२ था। मेरे रूम में मैं, सुप्रवि, रंजना और संस्कृति हम चार लोग थे। मैं हमारे रूम में गई और सबसे पहले रूम को देखा, चेक किया, और सामान रखा। इसके बाद हमारे हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा की शुरुआत होती है।

हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा का पहला दिन

अक्षरधाम मंदिर

२० मार्च २०२४ को हम सब दिल्ली पहुँच गए। उसके बाद फ्रेश होकर दोपहर एक बजे खाना खाने के लिए बाहर चले गये। खाना खाने के बाद हमें सर ने बताया कि हम अक्षरधाम मंदिर जाएंगे।तो हम ३:०० बजे अक्षरधाम मंदिर जाने के लिए मेट्रो स्टेशन पर जाकर टिकट निकालि और मेट्रो में बैठकर अक्षरधाम मंदिर चले गए।

वहाँ बहुत कड़क चेकिंग हो रही थी। वहाँ हमारी चेकिंग की गई और हम सब अंदर गए तो हमें पता चला कि मोबाइल फोन्स, स्मार्ट वॉच पहनकर जाना अलाउड नहीं था। तो हमने वहाँ पर एक रूम में रख दिया।

अक्षरधाम मंदिर का इतिहास

अक्षर धाम मंदिर ६ नवंबर २००५ को खुला था। मंदिर का निर्माण कार्य ८ नवंबर २००० को शुरू हुआ था और ६ नवंबर २००५ को आम जनता के लिए खोला गया। इस मंदिर को बनाने में पांच वर्षों का समय लगा गिर का निर्माण ज्योतिरधर स्वामी नारायण के भगवान के स्मृति में किया था।

नई दिल्ली में बना स्वामी नारायण मंदिर ही अक्षरधाम मंदिर एक अनोखा सांस्कृतिक तीर्थ है। अक्षरधाम मन्दिर को गुलाबी, सफेद संगमरमर और बलुआ पत्थरों के मिश्रण से बनाया गया है। इस मंदिर को बनाने में स्टील, लोहे और कंक्रीट का इस्तेमाल नहीं किया गया। मंदिर को बनाने में लगभग पांच साल का समय लगा था। श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज के नेतृत्व में इस मंदिर को बनाया गया था। करीब १०० एकड़ भूमि में फैले इस मंदिर को ११ हजार से ज्यादा कारीगरों की मदद से बनाया गया। पूरे मंदिर को पांच प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। मंदिर में उच्च संरचना में २३४ नक्काशीदार खंभे, ९ अलंकृत गुंबदों, २० शिखर होने के साथ २०००० मूर्तियां भी शामिल हैं। मंदिर में ऋषियों और संतों की प्रतिमाओं को भी स्थापित किया गया है। पी यह मंदिर हफ्ते में दिन खुला रहता है और सोमवार को बंद रहता है इस मंदिर में २८७० सीढ़ियां बनी हुई है।

यह मंदिर बहुत ही खूबसूरत है दिल्ली के पारंपरिक १०००० पुराने भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और वास्तुकला को दर्शाता है। रिसर के अन्य आकर्षण तीन प्रदर्शनी हॉल है सहजानंद प्रदर्शन, नीलकंठ यात्रा, और संस्कृत विहार।

म्यूजिकल फव्वारा भी है। वहाँ मंदिर के सामने ही स्वामीनारायण के चरण हैं जिसमें मैंने पैसे गिराए थे। इस तरह से अक्षरधाम मंदिर है। उसके बाद हम बाहर आकर मंदिर के बाहर गेट एक पर हमारा ग्रुप फोटो निकाला और हम मेट्रो में बैठकर चले गए। यहीं पर हमारा पहला दिन समाप्त होता है।

अक्षरधाम मंदिर

इंडिया गेट

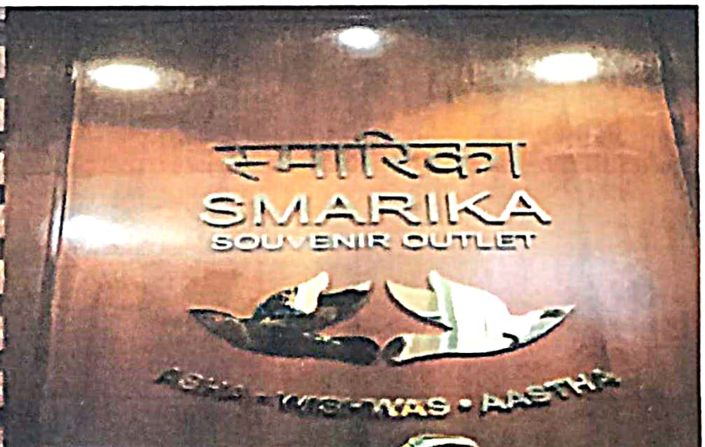

इंडिया गेट

अगले दिन २१ मार्च २०२४ को हम सुबह उठकर मुहँ धोकर नाश्ता किया और ९:०० बजे होटेल से निकलकर बस लेकर इंडिया गेट पर चले गए। वहा हम १०:०० बजे तक पहुँच गए। मैं वहा फूलों को देखकर हैरान हुयी थी क्योंकि इस कड़ी धूप में भी वे खिली हुई थी। इंडिया गेट दिल्ली का ही नहीं बल्कि भारत का महत्वपूर्ण स्मारक है। इंडिया गेट को ८०००० से अधिक भारतीय सैनिकों की याद में निर्मित किया गया था। जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में वीरगति पाई थी। यह स्मारक ४२ मीटर ऊंची आर्च से सज्जित है और इसे प्रसिद्ध वास्तुकार एडविन ल्यूटियन्स ने डिज़ाइन किया था। इंडिया गेट को पहले अखिल भारतीय युद्ध स्मृति के नाम से जाना जाता था। इंडिया गेट की डिज़ाइन इसके फ्रांसीसी प्रतिरूप स्मारक आर्क- डी-ट्रायोम्फ के समान है।

वास्तुकला यह इमारत भरतपुर से लाए गए लाल और पीले पत्थरों से बनी है जो एक विशाल ढांचे के मंच पर खड़ी है। इसके आर्च के ऊपर दोनों ओर 'इंडिया' लिखा है। इसकी दीवारों पर ७०००० से अधिक भारतीय सैनिकों के नाम शिल्पित किए गए हैं, जिनकी याद में इसे बनाया गया है। इसके शीर्ष पर उथला गोलाकार बाउलनुमा आकार है जिसे विशेष अवसरों पर जलते हुए तेल से भरने के लिए बनाया गया था।

वहा सारे शहीद जवानों के नाम लिखे हुए है। और स्मारिका भी है। जहा सभी इंडियन आर्मी के चीजे रखी हैं अगर कोई चाहे तो खरीद सकता है। इण्डिया गेट की दीवारों पर हजारों शहीद सैनिकों के नाम अंकित हैं और सबसे ऊपर अंग्रेजी में लिखी कुछ पंक्तियाँ हैं।

विशेषता - इंडिया गेट को एडविन लुटियन ने डिज़ाइन किया था जो तब दिल्ली के मुख्य वास्तुकार थे। उन्हें उस समय युद्ध स्मारक का एक प्रमुख डिजाइनर भी माना जाता था। साल 1931 में इसका निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। इंडिया गेट का निर्माण करने में मुख्य रूप से लाल और पीले पत्थरों का उपयोग किया गया है, जिन्हें खासतौर पर भरतपुर से लाया गया था।

इंडिया गेट के बारे में कुछ खास बातें

ड्यूक ऑफ कनॉट ने १० फरवरी १९२१ को इंडिया गेट युद्ध स्मारक की आधारशिला रखी। मेहराब को बनाने के लिए गुलाबी और पीले भरतपुर पत्थरों का इस्तेमाल किया गया था। संरचना के शीर्ष पर, INDIA शब्द लिखा गया है और यह सूर्य के शिलालेख से भी सुशोभित है। रोमन अंकों में तिथियों के साथ। यहां भारत के तीनों सशस्त्र बलों के झंडे फहराए जाते हैं। गणतंत्र दिवस पर, हर साल भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतीय ध्वज फहराया जाता है। इंडिया गेट पर बहुत सारे फोटो निकाले, स्मारक देखे, बाग –बगीचा देखा। लेकिन बहुत धूप थी। और हम वहा से चले गए।

ललित कला अकादेमी

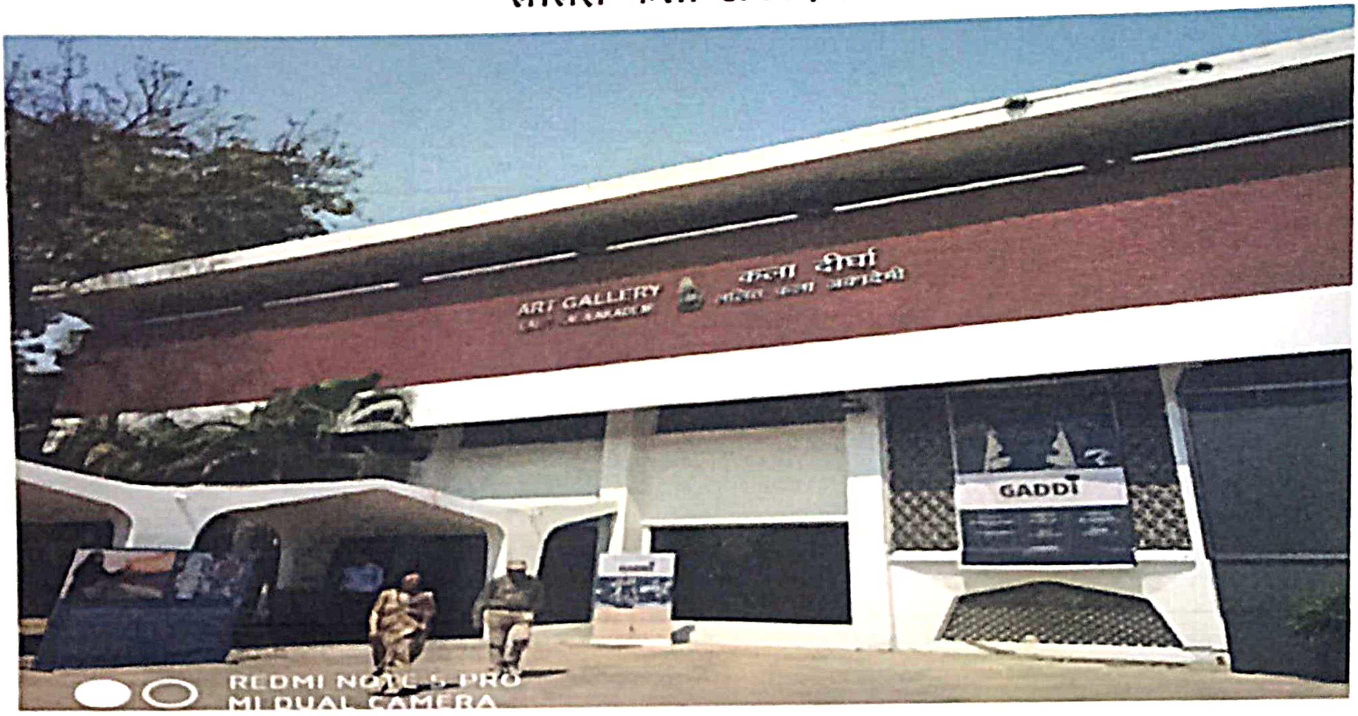

इंडिया गेट के बाद हम ललित कला अकादेमी देखने गए। ललित कला अकादमी मे साहित्य बहुत ही अच्छे अलग तरीके से लिखा हुआ था। वहाँ पर हमें एक मैम ने गाइड किया। उसके उपरांत हम लायब्ररी देखने गए। ललित कला अकादमी स्वतंत्र भारत में गठित एक स्वायत्त संस्था है जो ५ अगस्त १९५४ को भारत सरकार द्वारा स्थापित की गई। यह एक केंद्रीय संगठन है जो भारत सरकार द्वारा ललित कलाओं के क्षेत्र में कार्य करने के लिए स्थापित किया गया था, यथा मूर्तिकला, चित्रकला, ग्राफकला, गृहनिर्माणकला आदि।

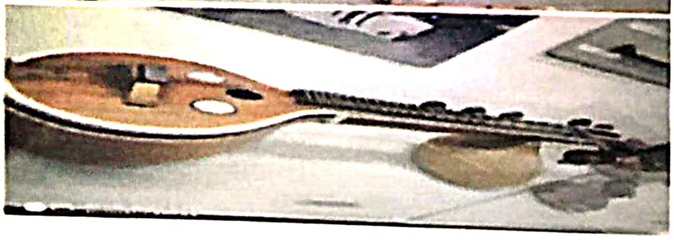

उद्देश्य

भारतीय कला के प्रति देश-विदेश में समझ बढ़ाने और प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार ने नई दिल्ली में १९५४ में 'राष्ट्रीय ललित कला अकादमी' स्थापना की थी। इसके लिए यह अकादमी प्रकाशनों, कार्यशालाओं तथा शिविरों का आयोजन करती है। यह प्रतिवर्ष एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी तथा प्रत्येक तीसरे वर्ष 'त्रैवार्षिक भारत' नामक एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी भी आयोजित करती है। अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष डॉ. आनन्द कुमार स्वामी की स्मृति में एक व्याख्यानमाला का आयोजन किया जाता है।

राष्ट्रीय कला अकादमी का मुख्यालय रवीन्द्र भवन, दिल्ली में है और यह भारतीयों के अलावा अन्य राष्ट्रीयताओं का मनोरंजन नहीं करता है। राष्ट्रीय कला अकादमी की फंडिंग केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा की जाती है। राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द ने उत्तम पाचारणे को ललित कला अकादमी का अध्यक्ष नियुक्त किया क्योंकि वह एक महान कलाकार और मूर्तिकार थे।

राष्ट्रीय कला अकादमी भुवनेश्वर, चेन्नई, बैंगलोर, दिल्ली, कोलकाता, लखनऊ और शिमला जैसे कई स्थानों पर स्थित है। अपनी ६०वीं वर्षगाँठ के अवसर पर, १६ सितंबर २०१४ को उन्होंने एक कार्यक्रम आयोजित किया जिसे स्पिरिट ऑफ़ दिल्ली के नाम से जाना जाता है और उस कार्यक्रम में कई कलाकारों और कवियों को अपना काम या अपनी बनाई कलाएँ दिखाने के लिए बुलाया गया था।

कुछ बातें

ललित कला अकादमी में एक म्युज़ीयम है वहा गए। उसमें हमने अलग अलग प्रकार के नए पुराने संगीत वाद्यंतर देखे। वहा के एक सर से हमने बातचीत भी की और वाद्यंतरो के बारे में जानकारी हासिल की। बहुत सारे वाद्य वहा पर है। वो संगीत वाद्य जो है वो कहां से लाए गए, कहां उनका निर्माण हुआ, भारत के कौनसे राज्य में इन्हे बजाया जाता है, किस अवसर पर उन्हें बजाया जाता है, किन्ह वस्तुओ के उपयोग से वह बने हैं, उनकी क्या खासियत है, उन वस्तुओं को नाम कैसे दिया गया इन सबके बारे में हमे जानकारी प्राप्त हुई। वहा पर हम पुस्तकालय में भी गए थे। और वहा बहुत सारे नाटक के संबंधित प्रकाशित पुस्तकें, पत्रिकाएँ देखी। कहीं किताबे वहा पर हैं और हम चाहे तो किताबे खरीद भी सकती हैं।

अकादमी में अलग अलग तरह के नृत्य के मास्क भी है जैसे रामलीला मास्क, जात्रा मास्क, गणपति मास्क, चाऊ नृत्य मास्क आदि। अलग अलग देशों के मास्क जो अपने अपने परंपारिक नृत्य मे लगाते है वो हमने देखा। इन वाद्यंतरो को संभालकर रखना जरूरी है क्योंकि जो कलाएँ है वो लुप्त होती जा रही है। हाथ, औंठ, पैर, उंगलियों से बजानेवाले वाद्य वहा रखे हुए हैं। साप के आकार जैसे, हाथी के दांतो से बने, सिंग से बने, मोर के आकार जैसे, नगारे आदि वाद्य वहा पर सुरक्षित रखे हुए है जो की बहुत ही प्राचीन काल के है। इसी से हमारे आनेवाली पीढ़ी को भी संगीत वाद्य के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।

EDMI NOTE 5 PRO

लोटस टेंपल

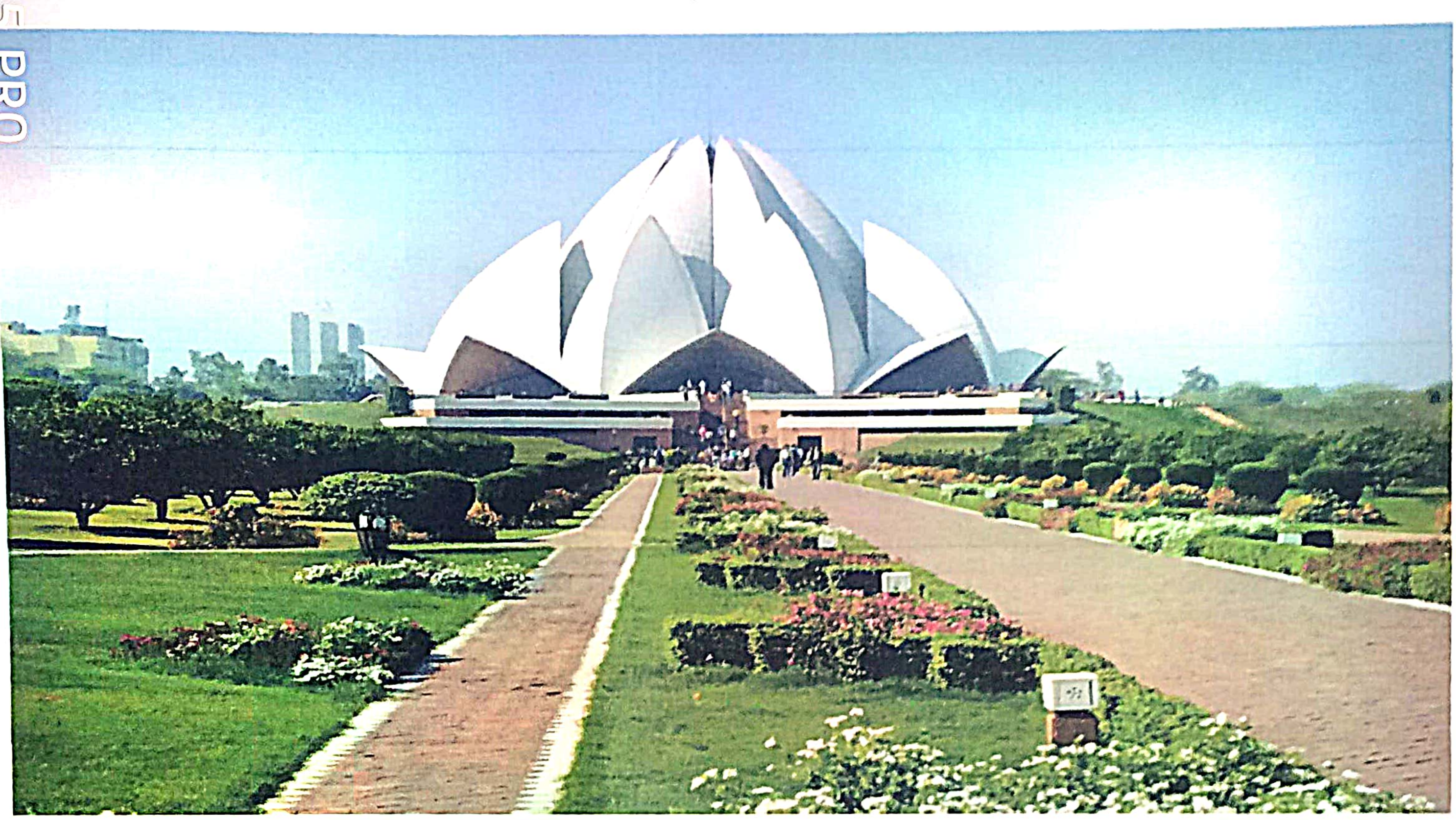

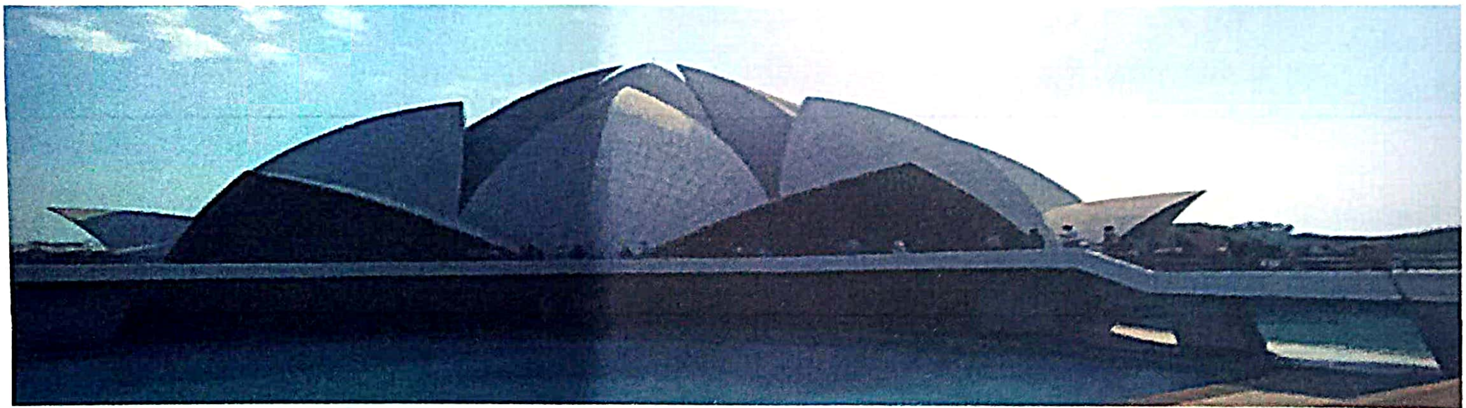

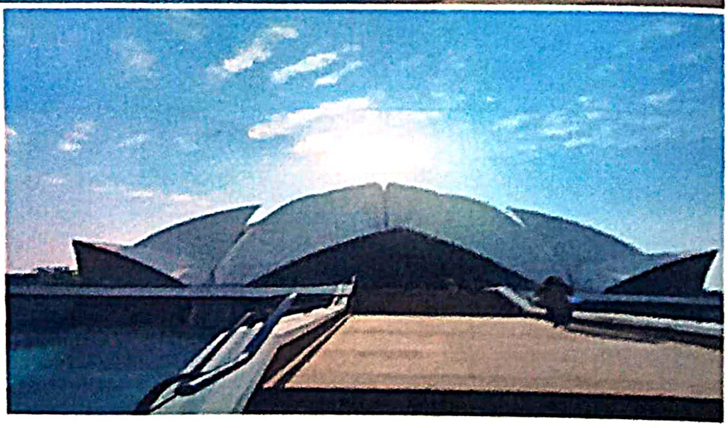

लोटस टेंपल

उसी दिन दोपहर को लोटस टेंपल देखने गए। वहा हम २:३० पहुँच गए थे। पहले हमे वहा खाना खाया और लोटस टेंपल देखने गए। लोटस टेंपल कहनेपर मुझे ऐसा लगा था की उसमें किसी भगवान की मूर्ती स्थापित की गयी होगी और उसे बाहर से कमल के आकार में बाँधा होगा जिस कारण उसे लोटस टेंपल कहते होंगे। लेकिन ऐसा नही था। वहा जानेपर मेरी गलतफहमी दूर हो गयी।

लोटस टेंपल एक डेस्टिनेशन है जो दिल्ली के प्रमुख आकर्षणों में से एक है और वह है लोटस टेंपल। लोटस टेंपल को कमल मंदीर भी कहा जाता हैं। दिल्ली के नेहरू प्लेस में स्थित लोटस टेंपल एक बहाई उपासना मंदिर है, जहा न ही कोई मूर्ति है और न ही किसी प्रकार की पूजा पाठ की जाती है। लोग यहां आते हैं शांति और सुकून का अनुभव करने। कमल के समान बनी इस मंदिर की आकृति के कारण इसे लोटस टेंपल कहा जाता है। कमल के फूल के आकार वाले इस मंदिर का निर्माण नवंबर १९८६ में पूरा हुआ और २४ दिसंबर १९८६ को इसका उद्घाटन किया गया। लेकिन आम जनता के लिए इस मंदिर को १ जनवरी १९८७ को नए साल के दिन खोला गया था। यही वजह है कि इसे २०वीं सदी का ताजमहल भी कहा जाता हैं।

लोटस टेंपल के अंदर जाने से पहले बहुत बड़ा बाग है। जो बहुत बड़ा है। वहा उन पौदो को बहुत ही अच्छा आकार दिया है जो उस मन्दिर की सुंदरता का भाग हैं। मंदीर के अंदर जाने से पहले हमें अपने जूते उतरना हैं और एक लाइन में जाना हैं। वही उस मंदीर के नीचे पानी है क्योंकि कमल पानी में होता है जिस कारण वश वहा पर पानी रखा है।

सभी को एक साथ जाने की अनुमति नहीं है। वहा कुछ बहाई ट्रस्ट के लोग है जो सब लोगों को लोटस मंदीर के इतिहास के बारे में बताते है और सभी को अंदर जाकर आवाज़ न करने की सलाह देते है। मंदीर में फोटो निकालना मना है।

भारतीय परंपराओं में कमल को शांति और पवित्रता के सूचक और ईश्वर के अवतार के रूप में देखा जाता है। दुनिया भर में आधुनिक वास्तु कला के नमूनों में से एक लोटस टेंपल भी है। इसका निर्माण बहा उल्लाह ने करवाया था, जो कि बहाई धर्म के संस्थापक थे। इसलिए इस मंदिर को बहाई मंदिर भी कहा जाता है। बावजूद इसके यह मंदिर किसी एक धर्म के दायरे में सिमटकर नहीं रह गया। यहां सभी धर्म के लोग आते हैं और शांति और सूकून का लाभ प्राप्त करते हैं। इसके निर्माण में करीब १ करोड़ डॉलर की लागत आई थी। वर्ष २००१ की एक रिपोर्ट के मुताबिक इसे दुनिया की सबसे ज्यादा देखी जाने वाली जगह बताया गया था।

लोटस टेंपल खुलने का समय:- गर्मियों के मौसम में सुबह ९ बजे से शाम को ७ बजे तक मंदिर खुलता है और वहीं सर्दियों में सुबह साढ़े ९ बजे से शाम को साढ़े ५ बजे तक के लिए खोला जाता है। यहां पर किसी प्रकार की एंट्री फीस नहीं ली जाती है।

लोटस टेंपल के अंदर बहुत बड़ा हॉल है और उसकी ऊँचाई भी बहुत है। और उपर कमल की पंखुड़ियों से बना फूल का आकार है। अंदर जाने के बाद मन को शांति मिलती है क्योंकि सब मौन रहते है कोई शोर शरवा नही हैं। मन्दिर के बाहर कई सारी दुकाने है जैसे खाना खाने के, चुड़ीवाले, पानी - पूरीवाले आदि।

लोटस टेंपल का इतिहास

लोटस टेम्पल दिल्ली एक बहाई पूजा घर है, जिसे मशरिकुल-अधकार के नाम से भी जाना जाता है, जिसे दिसंबर १९८६ में जनता के लिए खोला गया था। अन्य सभी बहाई मंदिरों की तरह, यह भी धर्मों और मानवता की एकता के लिए समर्पित है। सभी धर्मों के अनुयायियों का प्रार्थना, पूजा और अपने धर्मग्रंथों को पढ़ने के लिए यहां एकत्रित होने के लिए स्वागत है। दिल्ली में लोटस टेम्पल को दुनिया भर में स्थित सात प्रमुख बहाई पूजा घरों में से एक और एशिया में एकमात्र माना जाता है।

वास्तुकला

हरे-भरे भूदृश्य वाले बगीचों से घिरी, कमल से प्रेरित यह संरचना २६ एकड़ भूमि में फैली हुई है। ग्रीस से प्राप्त सफेद संगमरमर का उपयोग करके बनाया गया, इसमें मुक्त अवस्था में २७ पंखुड़ियाँ शामिल हैं। संरचना को नौ-तरफा गोलाकार आकार देने के लिए इन पंखुड़ियों को तीन के समूहों में व्यवस्थित किया गया है, जैसा कि बहाई धर्मग्रंथ में संकेत दिया गया है। इसमें नौ प्रवेश द्वार हैं जो एक विशाल केंद्रीय हॉल में खुलते हैं, जिसकी ऊंचाई लगभग ४० मीटर है। मंदिर में १३०० लोगों के बैठने की क्षमता है और इसमें एक समय में २५०० लोग बैठ सकते हैं।

मंदिर की एक आकर्षक विशेषता पंखुड़ियों के चारों ओर स्थित पानी के नौ कुंड हैं। वे किसी जलाशय में आधे खिले हुए कमल का आभास देते हैं और रात में रोशनी होने पर पूरी संरचना शानदार दिखती है। इस मंदिर का डिज़ाइन ईरानी-अमेरिकी वास्तुकार फ़रीबोरज़ साहबा द्वारा किया गया था, जबकि संरचनात्मक डिज़ाइन यूके की फर्म फ्लिंट और नील द्वारा किया गया था। लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड के ईसीसी कंस्ट्रक्शन ग्रुप ने मंदिर के निर्माण कार्य का बीड़ा उठाया और १० मिलियन डॉलर की लागत से इसे पूरा किया।

विशेषताएँ

लोटस टेम्पल को बनाने में लगभग १० साल का लंबा समय लगा। लोटस टेम्पल बहाई धर्म के ७ प्रमुख मंदिरों में से एक है। इसके अलावा बहाई धर्म के अन्य मंदिर कंपाला, सिडनी, इलिनोइस, फ्रैंकफर्ट, विलमेट, पनामा और एपिया में हैं। ऐसा माना जाता है कि यह लोटस टेंपल एकता, अखंडता और विस्तार का प्रतिनिधित्व करता है। इस मंदिर में प्रतिदिन हजारों लोग निर्धारित प्रार्थना में भाग लेने के लिए आते हैं। लोटस टेम्पल में हर घंटे ५ मिनट के लिए विशेष प्रार्थना आयोजित की जाती है। इसके अलावा यहां किसी भी तरह के संगीत वाद्ययंत्र बजाने की भी इजाजत नहीं है।

उद्देश्य

लोटस टेम्पल को बहिया आस्था के पूजा स्थल के रूप में बनाया गया था; बहाई धर्म लोगों के बीच एकता और समानता पर जोर देता है और सभी धर्मों के महत्व को सिखाने में विश्वास करता है। लोटस टेम्पल सभी धर्मों के लोगों को संप्रदाय पर किसी भी प्रतिबंध के बिना पूजा करने के लिए स्वागत करता है। सभी धर्म के लोग यहाँ आकर बैंठ सकते हैं इसी उद्देश्य से बनाया गया।

मुझे वहा लोटस टेंपल के पास पानी देखकर नहाने की इच्छा हुई थी क्योंकि वहा बाहर गर्मी थी। मन्दिर से बाहर आकर हमने फोटो लिए और चप्पल पहने और वहा के परिसर का आनंद लेते हुए चले गए।

हुमायुं का मकबरा

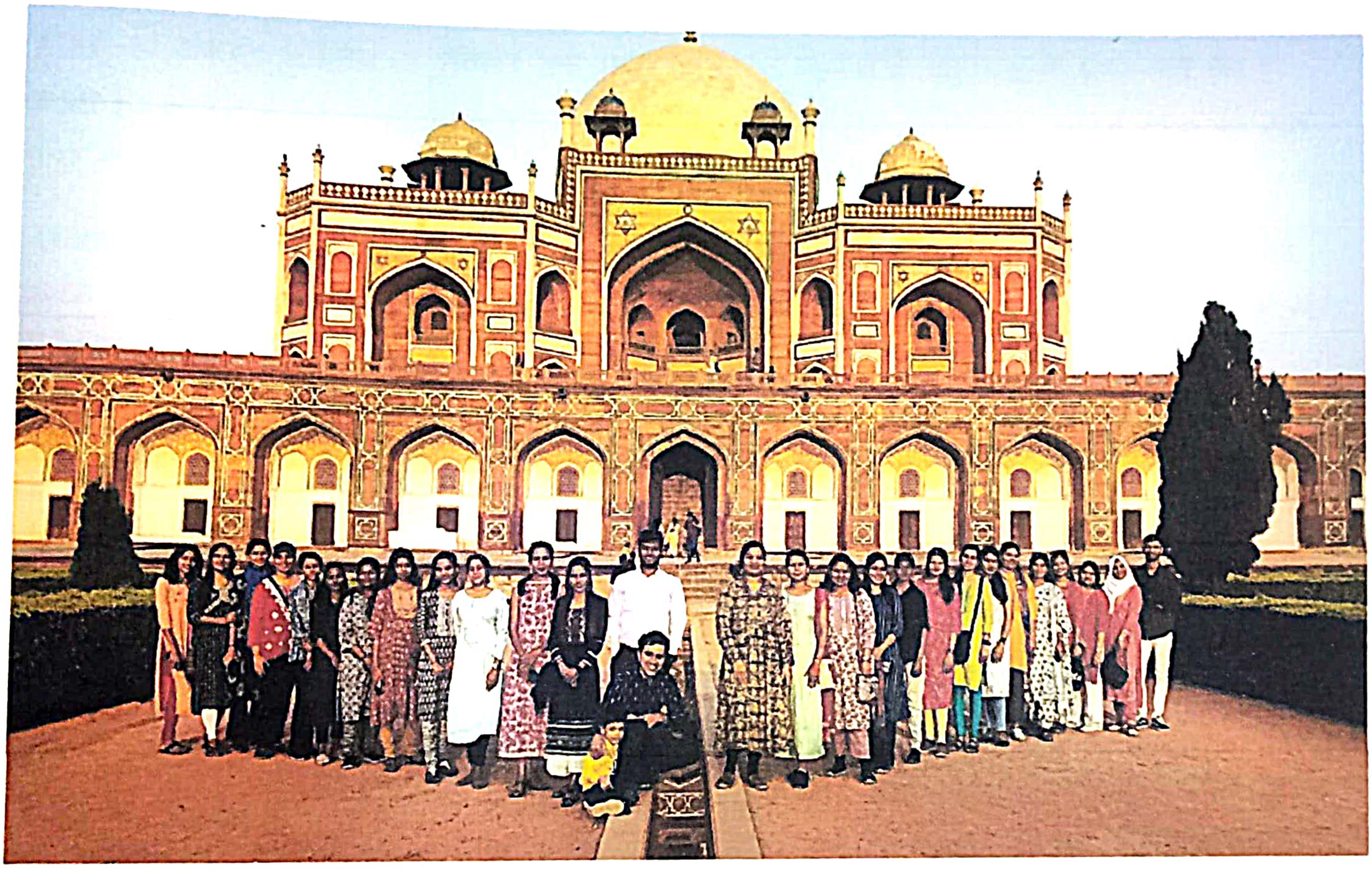

लोटस टैंपल से निकलने के बाद हम हुमायुं का मकबरा देखने गए। हुमायूं का मकबरा दिल्ली के सबसे प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में से एक है, जिसकी वास्तुकला आपको अपनी तरफ आकर्षित कर सकती है।यह खूबसूरत मकबरा मुगल सम्राट हुमायूं की याद में उनकी पहली पत्नी हाजी बेगम द्वारा निर्मित करवाया गया था। वह बहुत बड़ा है।

हुमायूं के मकबरे का इतिहास

हाजी बेगम ने हुमायूं की मृत्यु के नौ साल बाद १५६५ में इस मकबरे का निर्माण कार्य शुरू करवाया था, जो १५७२ ई में पूरा हुआ। लाल बलूआ पत्थर और सफेद संगमरमर पत्थरों से बने इस मकबरे को उस समय लगभग १५ लाख रुपये की लागत में बनवाया गया था और इसकी संरचना इस्लामिक और फारसी वास्तुकला का मिश्रण है। हुमायूं के मकबरे की शोभा तब बढ़ी, जब १९९३ में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में इसे शामिल किया गया।

हुमायूं के मकबरा के खुलने और बंद होने का समय

हुमायूं का मकबरा सोमवार से रविवार तक सुबह ६:०० बजे खुलता है और रात के ६:०० बजे बंद हो जाता है। आप चाहें तो किसी भी मौसम में दिल्ली के इस खूबसूरत ऐतिहासिक पर्यटन स्थल की ओर रूख कर सकते हैं, लेकिन वसंत ऋतु और सर्दियों के मौसम में यहां घूमने का अच्छा समय है।

दरअसल, गर्मियों के दौरान गर्मी और वर्षा ऋतु में बारिश आपकी घूमने की योजना में बाधा उत्पन्न करने का कारण बन सकती है। मकबरे से जब बाहर देखते हो तब बेहद सुंदर नज़ारा है। बहुत बड़ा बाग है कहा जाता है कि इसके निर्माण में फारसी को भी शामिल किया गया था।

महत्वपूर्ण बाते:- मिश्रित वास्तुकला: यह भारतीय, फारसी और तुर्की स्थापत्य शैली का मिश्रण था।

विविधता: विभिन्न प्रकार की इमारतें, जैसे- राजसी द्वार (प्रवेश द्वार), किले, मकबरे, महल, मस्जिद, सराय आदि इसकी विविधता थी। भवन निर्माण सामग्री: इस शैली में अधिकतर लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर का प्रयोग किया जाता था।

विशेषता: इस शैली में विशिष्ट विशेषताएँ हैं जैसे- मकबरे की चारबाग शैली, स्पष्ट बल्बनुमा गुंबद, कोनों पर पतले बुर्ज, चौड़े प्रवेश द्वार, सुंदर सुलेख, अरबी और स्तंभों तथा दीवारों पर ज्यामितीय पैटर्न एवं स्तंभों पर समर्थित महल हॉल आदि थी। मेहराब, छतरी और विभिन्न प्रकार के गुबंद भारत इस्लामी वास्तुकला में बेहद लोकप्रिय हो गए तथा मुगलों के शासन के तहत से और विकसित किया गया।

हुमायूँ के मकबरे में हुमायूँ का शरीर दो अलग-अलग जगहों पर दफनाया गया है।

एक इंग्लिश व्यापारी, विलियम फिंच १६११ में मकबरे को देखने आया था, उसने बाद में अपने लेख में मकबरे की आतंरिक सुन्दरता, शामियाने, कब्र और दीवारों पर की गयी कलाकृतियों के बारे में बताया। उसने लिखा है कि केन्द्रीय कक्ष की आंतरिक सज्जा आज के खालीपन से अलग बढ़िया कालीनों व गलीचों से परिपूर्ण थी। कब्रों के ऊपर एक शुद्ध श्वेत शामियाना लगा होता था और उनके सामने ही पवित्र ग्रंथ रखे रहते थे। इसके साथ ही हुमायूँ की पगड़ी, तलवार और जूते भी रखे रहते थे।

मकबरे की डिजाईन पर्शियन और भारतीय परंपराओ के अनुसार बनायी गयी है।हुमायूँ के मकबरे में तक़रीबन १५० कब्रे है जो एक गार्डन से घिरी हुई है। यह मकबरा बहुत बड़ा है और सबको आकर्षित करता है। लोग उसे देखने के लिए दूर दूर से आते हैं। जहाँ ताज महल प्रेम का प्रतिक है उसी तरह हुमायुं का मकबरा भी हम प्रेम का प्रतिक मान सकते हैं। हमलोगों ने यहाँ पर बहुत फोटो निकले। हमें वहा से नही निकले ऐसा लग रहा था। बाद में हम वहा से शाम के ६:०० बजने के बाद निकल गए।

लक्ष्मीनारायण मंदिर / बिरला मंदिर

बिरला मन्दिर

हुमायुं के मकबरे से निकलने के बाद हम २० –२५ मिनट में बिरला मन्दिर पहुँच गए। हम सब बस से उतरकर अंदर जाने के लिए गए। सब से पहले हमने हमारा समान इकट्ठा किया क्योंकि मन्दिर के अंदर मोबाईल फोन लेकर जाना मना है। उसके साथ हमें अपने जूते भी वही एक थैली मे रखना पड़ा। उसके उपरांत मन्दिर में प्रवेश किया।

बिरला मन्दिर का इतिहास

बिरला मन्दिर को लक्ष्मीनारायण मन्दिर नाम से भी जाना जाता है। यह मन्दिर दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है और एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है। उद्योगपति श्री द्वारा निर्मित १९३९ में जेके बिड़ला द्वारा बनवाया गया यह खूबसूरत मंदिर कनॉट प्लेस के पश्चिम में स्थित है। बता दें कि मंदिर की आधारशिला महाराज उदयभानु सिंह ने रखी थी। इस मंदिर के निर्माण के समय पंडित विश्वनाथ शास्त्री मार्गदर्शक थे। मंदिर का निर्माण पूरा होने के बाद स्वामी केशव नंदजी ने समापन समारोह और यज्ञ

किया गया। इस मंदिर का उद्घाटन महात्मा गांधी द्वारा किया गया था, जिन्होंने इसके लिए यह शर्त रखी थी कि मंदिर में प्रवेश भक्तों की जाति द्वारा परिभाषित नहीं किया जाएगा। उन्होंने इस बात को जोर देकर कहा था कि मंदिर में सभी जातियों के भक्तों को प्रार्थना करने की अनुमति दी जानी चाहिए, चाहे वह ब्राह्मण हो या शूद्र।

वास्तुकला

यह मन्दिर वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना भी है। इस मंदिर के डिजाइनर श्रीश चंद्र चटर्जी आधुनिक भारतीय वास्तुकला आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे। यह देश में एक बहुत ही दिलचस्प समय था। देश स्वदेशी आंदोलन को बड़े पैमाने पर देख रहा था। यह मन्दिर अपने समय को दर्शाती हैं। मंदिर कि वास्तुकला बेहद आकर्षक है। चटर्जी एक ऐसे व्यक्ति थे जो अपनी आधुनिक मानसिकता के लिए जाने जाते थे। उन्होंने इसका निर्माण धार्मिक और राष्ट्रीय महत्व को ध्यान में रखते हुए इस मंदिर को बनाने में आधुनिक तकनीकों और सामग्रियों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया।

बिरला मंदिर एक तीन मंजिला इमारत है, जिसे वास्तुकला की नगाड़ा शैली में बनाया गया है। आचार्य विश्वनाथ शास्त्री के नेतृत्व में बनारस के सैकड़ों कारीगरों ने मंदिर के सजाने के काम किया था। इस मंदिर में कोटा स्टोन वर्क भी है जो मकराना, आगरा, जैसलमेर, और कोटा जैसे विभिन्न स्थानों से लाया गया था। इस मंदिर का सबसे प्रमुख आकर्षण इसका शिखर है जो गर्भगृह के ऊपर है और १६० फीट ऊंचा है। मंदिर के उत्तर की तरफ गीता भवन स्थित है जो भगवान कृष्ण को समर्पित है। मुख्य मंदिर के अलावा और भी मंदिर भी स्थित हैं जो भगवान शिव, बुद्ध और कृष्ण को समर्पित हैं। मंदिर की आकर्षक वास्तुकला के अलावा यहां के कृत्रिम परिदृश्य और झरने इस मंदिर की सुंदरता में चार चांद लगाते हैं। यह मन्दिर सुबह ४:३० बजे खुलता है और दोपहर १:३० बजे बंद होता है। उसके बाद २:३० को खुलता है और रात के ९:०० बजे बंद होता हैं।

कुछ बातें

इस मंदिर में कुल तीन भाग है जो धर्म के तीन रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मंदिर के सबसे महत्वपूर्ण भागों में लक्ष्मी नारायण की आकर्षक मूर्ति शामिल है जो अखंड पत्थर से बनी हुई है। मंदिर की दूसरी मूर्तियों में भगवान गणेश की मूर्ति शामिल है। मंदिर का इंटीरियर पौराणिक चित्रों और बहुत से हिन्दू देवताओं के चित्रों से सजाया गया है। बिरला मंदिर में एक विशाल मार्बल है, जहाँ सभी एतिहासिक पौराणिक घटनाओं का उल्लेख किया गया है।मन्दिर मे जाने के बाद वहा से निकलने का मन ही नही करता। लेकिन जाना सभी को होता है। हम ८:०० बजने से पहले वहा से निकल गए। हम सब जहा रहे थे ज्योति महल में जाने के लिए गए। हम ९ बजे तक पहुँच गए और हमने खाना खाया और सो गए। यही पर हमारा यह दिन समाप्त होता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय

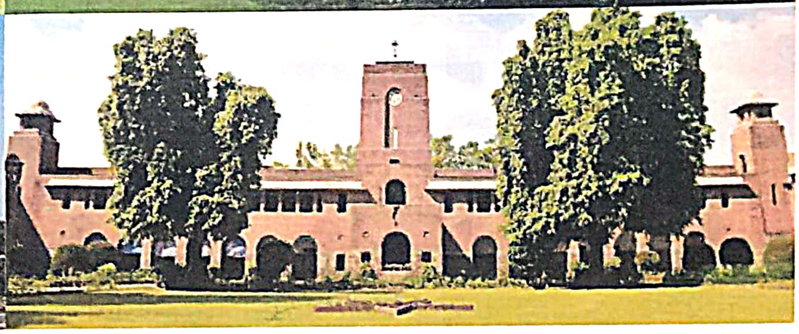

REDMI NOTE 5 PRO

दिल्ली विश्वविद्यालय

अगले दिन २२ मार्च २०२४ को सुबह हम निकले दिल्ली विश्वविद्यालय। दिल्ली विश्वविद्यालय उस दिन बंद था। हम बाहर से पुरा विश्वविद्यालय घूम लिया, क्लासिस देखे।

दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना के १०० साल पूरे होने के बाद १ मई से शताब्दी समारोह मनाया जाएगा। डीयू के इस शताब्दी सारोह को खास बनाने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन ने सालाना समारोह की योजना बनाई है। कुलपति प्रोफेसर योगेश सिंह ने कहा है कि डीयू को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ २०० विश्वविद्यालयों की सूची में शामिल कराने का लक्ष्य रखा गया है.

शताब्दी समारोह के मौके पर डीयू के कैंपस में १०० जगहों पर १०० पेड़ लगाए जाएंगे। इसके अलावा, नए हॉस्टल बनाए जाएंगे, लाइट ऐंड साउंड शो के जरिए इतिहास बताया जाएगा, पुस्तक मेला, प्रदर्शनी, सम्मेलन और लिटफेस्ट का भी आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा उन छात्रों को अपनी डिग्री पूरी करने का मौका दिया जाएगा, जिन्होंने किसी कारणवश कोर्स को बीच में छोड़ दिया था।

इतिहास

कैसे बना दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना अंग्रेजों के शासनकाल में साल १९२२ में हुई। उस समय की संसद यानी सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली के एक कानून द्वारा इस विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। भारत के राष्ट्रपति इसके विजिटर, उप-राष्ट्रपति चांसलर और सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस इसके प्रो-चांसलर होते हैं।

आजादी की लड़ाई से भी कनेक्शन बताया जाता है कि जब चंद्रशेखर आजाद ब्रिटिश सरकार से छिप रहे थे तो रामजस कॉलेज के छात्रों ने उन्हें अपने पास छिपा लिया था. आजाद ने सिखों जैसी वेशभूषा बना रखी थी और हॉस्टल में वॉर्डन के संरक्षण में रह रहे थे. भगत सिंह को जब सेंट्रल असेंबली में बम फेंकने के जुर्म में ८ अप्रैल १९२९ को सजा सुनाई गई, तब उन्हें वायसरॉय लॉज में बंद रखा गया था. १८५७ में सैन्य विद्रोह के दौरान अंग्रेज अधिकारी यहीं आकर छिपे थे।

देश के विभाजन के समय नहीं मनाया गया दीक्षांत समारोह साल १९४७ में जब देश को आजादी मिली तो साथ-साथ बंटवारा भी हुआ। उस साल दिल्ली यूनिवर्सिटी के २५ साल पूरे हुए थे यानी रजत जयंती वर्ष था। इसी साल विजयेंद्र कस्तूरी रंगा वरदराज राव ने डीयू के मुख्य भवन में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया। हालांकि, उस साल दीक्षांत समारोह का आयोजन नहीं किया गया. इसके बजाय, अगले साल यानी १९४८ में एक खास समारोह आयोजित हुआ. इस कार्यक्रम में देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, लार्ड माउंटबेटन, अबुल कलाम आजाद, डॉ. जाकिर हुसैन और शांति स्वरूप भटनागर जैसे शख्स शामिल हुए।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में हम गए थे लेकिन हमें अंदर नहीं लिया गया। क्योंकि हमने पहले नोटिस नही दिया था ऐसा कुछ मामला हुआ था। तो हम बहुत देर बाहर खड़े रहकर चले गए।

हिंदू कॉलेज

जामिया मिलिया इसलामियाँ से हम हिंदू कॉलेज गए। वहा हमें एक सर मिले उन्होंने हमें पूरे कॉलेज के बारे में बताया। वहा दो नोटिसबोर्ड है अभिव्यक्ति और लहर। इस कॉलेज मे एक मेका इवेंट होता है जो बहुत बड़ा होता है। और इस इवेंट में जो सेलेब्रेटी भी आते है।हिंदू कॉलेज कहने पर लगता है कि केवल हिंदुओं के लिए होगा लेकिन ऐसा नही है। वहा एक खुला मंच है, बहुत बाड़ा मैदान है, उसी के साथ उस कॉलेज मे जो पड़कर गए है और सेलेब्रेटी बने है उनकी तस्वीरें वहा पर लगाई गई है। हिंदू कॉलेज को देश के प्रमुख और सम्मानित शैक्षणिक कॉलेजों में से एक के रूप में स्वीकार किया जाता है। हिंदू

कॉलेज, नई दिल्ली द्वारा कुल ३९ कोर्स प्रस्तुत किए गए हैं। हिंदू कॉलेज द्वारा प्रदान किए गए डिग्री में बी.एससी, बी.कॉम, बी.ए., एम.एससी, एम.कॉम, एम.ए. और सर्टिफिकेट डिप्लोमा पाठ्यक्रम कुछ विदेशी भाषाओं में शामिल हैं जिनमें फ्रेंच, जर्मन और रूसी शामिल हैं।

इतिहास

हिंदू कॉलेज की स्थापना १८९९ में ब्रिटिश राज के खिलाफ राष्ट्रवादी संघर्ष की पृष्ठभूमि में कृष्ण दासजी गुरवाले और पंडित दीन दयाल शर्मा द्वारा की गई थी। राय बहादुर अंबा प्रसाद, गुरवाले जी सहित कुछ प्रमुख नागरिकों ने एक कॉलेज शुरू करने का फैसला किया जो गैर-अभिजात्य और गैर-सांप्रदायिक होते हुए भी युवाओं को राष्ट्रवादी शिक्षा प्रदान करेगा। मूल रूप से, कॉलेज किनारी बाज़ार, चांदनी चौक में एक साधारण इमारत में स्थित था, और यह पंजाब विश्वविद्यालय से संबद्ध था क्योंकि उस समय दिल्ली में कोई विश्वविद्यालय नहीं था। जैसे-जैसे कॉलेज का विकास हुआ, १९०२ में इसे एक बड़े संकट का सामना करना पड़ा।

पंजाब विश्वविद्यालय ने कॉलेज को चेतावनी दी कि यदि कॉलेज को अपनी उचित इमारत नहीं मिली तो विश्वविद्यालय कॉलेज की मान्यता रद्द कर देगा। कॉलेज को इस संकट से उबारने के लिए राय बहादुर लाला सुल्तान सिंह आये। उन्होंने अपनी ऐतिहासिक संपत्ति का एक हिस्सा, जो मूल रूप से कश्मीरी गेट, दिल्ली में कर्नल जेम्स स्किनर की थी, कॉलेज को दान कर दिया। कॉलेज १९५३ तक वहीं से कार्य करता रहा। जब १९२२ में दिल्ली विश्वविद्यालय का जन्म हुआ, तब रामजस कॉलेज और सेंट स्टीफंस कॉलेज के साथ हिंदू कॉलेज को दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध कर दिया गया, जिससे वे संबद्ध होने वाले पहले तीन संस्थान बन गए। विश्वविद्यालय के साथ। हिंदू कॉलेज भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, विशेषकर भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बौद्धिक और राजनीतिक बहस का केंद्र था। यह दिल्ली का एकमात्र कॉलेज है जहां 1935 से छात्र संसद चल रही है, जिसने महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, मुहम्मद अली जिन्ना और सुभाष चंद्र बोस सहित कई राष्ट्रीय नेताओं को प्रेरित करने के लिए एक मंच प्रदान किया। युवा। १९४२ में गांधीजी के भारत छोड़ो आंदोलन के जवाब में, कॉलेज ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इस कॉलेज के कुछ शिक्षकों और छात्रों ने गिरफ्तारी दी। कॉलेज ने भी कई महीनों तक अपने गेट बंद कर दिये।

हिंदू कॉलेज हमने देखा। वहा कुछ बच्चों ने मिलकर हिंदू कॉलेज का चित्र निकला है। बाद में हम सब ने फोटो लिया और और हम निकल गए। एक खुशी की बात यह की हिंदू कॉलेज ने हमारा फोटो अख़बार में छपवाया। हमे देखकर बहुत खुशी हुई।

सार्वभौमिक है हिंदू कॉलेज का चरित्र - प्रो अंजू श्रीवास्तव

@ सिटी रिपोर्टर

हिंदू कालेज का चरित्र और स्वभाव सार्वभौमिक है। यहां भारत के राज्यों के साथ दुनिया के अनेक देशों के विद्यार्थी आते रहे हैं। हिंदू कालेज की प्राचार्य प्रो अंजू श्रीवास्तव ने परिसर में गोवा विश्वविद्यालय से आए शैक्षणिक समूह का स्वागत करते हुए कहा कि यात्रा और भ्रमण से शिक्षा में नवाचार बढ़ते हैं। इससे पहले गोवा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्राध्यापकों विद्यार्थियों के दल का स्वागत किया गया। हिंदी विभाग की प्रभारी प्रो रचना सिंह ने विभाग की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी और विभाग द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के अंक भेंट किए। उन्होंने विभाग की समितियों के बारे में भी जानकारी दी।

विभाग के अध्यापक डा पल्लव ने महाविद्यालय के विशाल इतिहास के बारे में बताया कि प्रसिद्ध उपन्यासकार और कृष्ण दत्त पालीवाल जैसे सुप्रसिद्ध विद्वान हिंदी विभाग में अध्यापन कर चुके हैं।

गोवा विश्वविद्यालय के डा दीपक वर्दे और डा श्वेता गोवेकर ने अपने दल का परिचय दिया। आयोजन में विभाग के डा रोमन सिंह और डा नौशाद अली ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दल ने हिंदू कालेज परिसर का भ्रमण किया और यहां की विभिन्न शोध परियोजनाओं को भी देखा। अंत में विभाग के पूर्व छात्र एवं शोधार्थी रोहतास कुमार ने आभार व्यक्त किया।

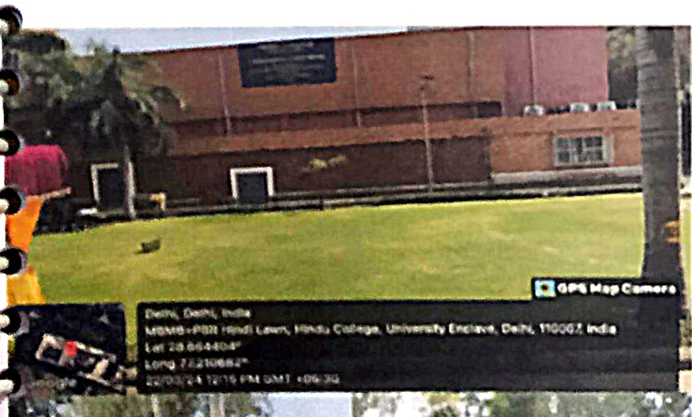

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय भारत का अग्रणी विश्वविद्यालय है तथा शिक्षण और शोध के लिए एक विश्व- प्रसिद्ध केंद्र है। ३.९१ के ग्रेड प्वाइंट (४ के पैमाने पर) के साथ राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा भारत में अव्वल जेएनयू को राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क(एनआईआरएफ), भारत सरकार द्वारा भारत में सभी विश्वविद्यालयों में वर्ष २०१६ में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ तथा वर्ष २०१७ में दूसरा प्राप्त हुआ। जेएनयू को वर्ष २०१७ में भारत के राष्ट्रपति की ओर से सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय का पुरस्कार मिला।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय मे जब हम पहुँचे तो एक सर आये, उनकी मदद से हम विश्वविद्यालय तक गए। उस दिन विश्वविद्यालय में चुनाव चल रहा था जिस कारण बहुत ही भीड़ थी। चुनाव के कारण लोग एक दूसरे को मार भी रहे थे। चुनाव के जगह पर कुछ दिव्यांग बच्चे गाना गा रहे थे। चुनाव के कारण विश्वविद्यालय बंद था तो हमें देखने को नहीं मिला। तो हम वहा घूमे थोड़ी देर और बाद में सेंट्रल लाइब्रेरी / पुस्तकालय देखने गए।

पुस्तकालय बहुत ही बड़ा हैं। विभिन्न प्रकार की किताबें हमे देखने को मिली। वहा कोई भी अगर शोध कार्य कर रहा है तो उसके लिए बहुत ही अच्छा होगा क्योंकि वहा उसे सभी किताबें मिल जाएगी। जो सर हमें वहा लेकर गए थे उसके दो विद्यार्थी मिले जो हमारे साथ उस दिन अंत तक बने रहे। एक बात यह की वहाँ पुस्तकालय से कुतुब मीनार दिखाई देता है।

इतिहास

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना १९६९ में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। इसका नाम भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाम पर रखा गया है। गोपालस्वामी पार्थसारथी इसके पहले कुलपति थे। प्रो मूनिस रज़ा संस्थापक अध्यक्ष और रेक्टर थे। तत्कालीन शिक्षा मंत्री एमसी छागला ने १ सितंबर १९९५ को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए बिल राज्य सभा में रखा था। इसके बाद हुई चर्चा के दौरान, संसद सदस्य भूषण गुप्ता ने राय व्यक्त की कि यह एक और विश्वविद्यालय नहीं होना चाहिए। वैज्ञानिक समाजवाद सहित नए संकायों का निर्माण किया जाना चाहिए और एक चीज़ जो इस विश्वविद्यालय को सुनिश्चित करनी चाहिए , वह है अच्छे विचारों को ध्यान में रखना और समाज के कमजोर वर्गों के छात्रों तक पहुंच प्रदान करना। जेएनयू विधेयक 16 नवंबर १९६६ को लोकसभा में पारित किया गया था और जेएनयू अधिनियम २२ अप्रैल १९६९ को लागू हुआ था।इंडियन स्कूल और इंटरनेशनल स्टडीज को जून १९७० में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के साथ मिला दिया गया था। विलय के बाद उपसर्ग “इंडियन” को नाम से हटा दिया गया और यह जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का स्कूल और इंटरनेशनल स्टडीज बन गया।

उद्देश्य

अध्ययन, अनुसंधान और अपने संगठित जीवन के उदाहरण और प्रभाव द्वारा ज्ञान का प्रसार तथा अभिवृद्धि करना। उन सिद्धान्तों के विकास के लिए प्रयास करना, जिनके लिए जवाहरलाल नेहरू ने जीवन-पर्यंत काम किया। जैसे राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, धर्म निरपेक्षता, जीवन की लोकतांत्रिक पद्धति, अन्तरराष्ट्रीय समझ और सामाजिक समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

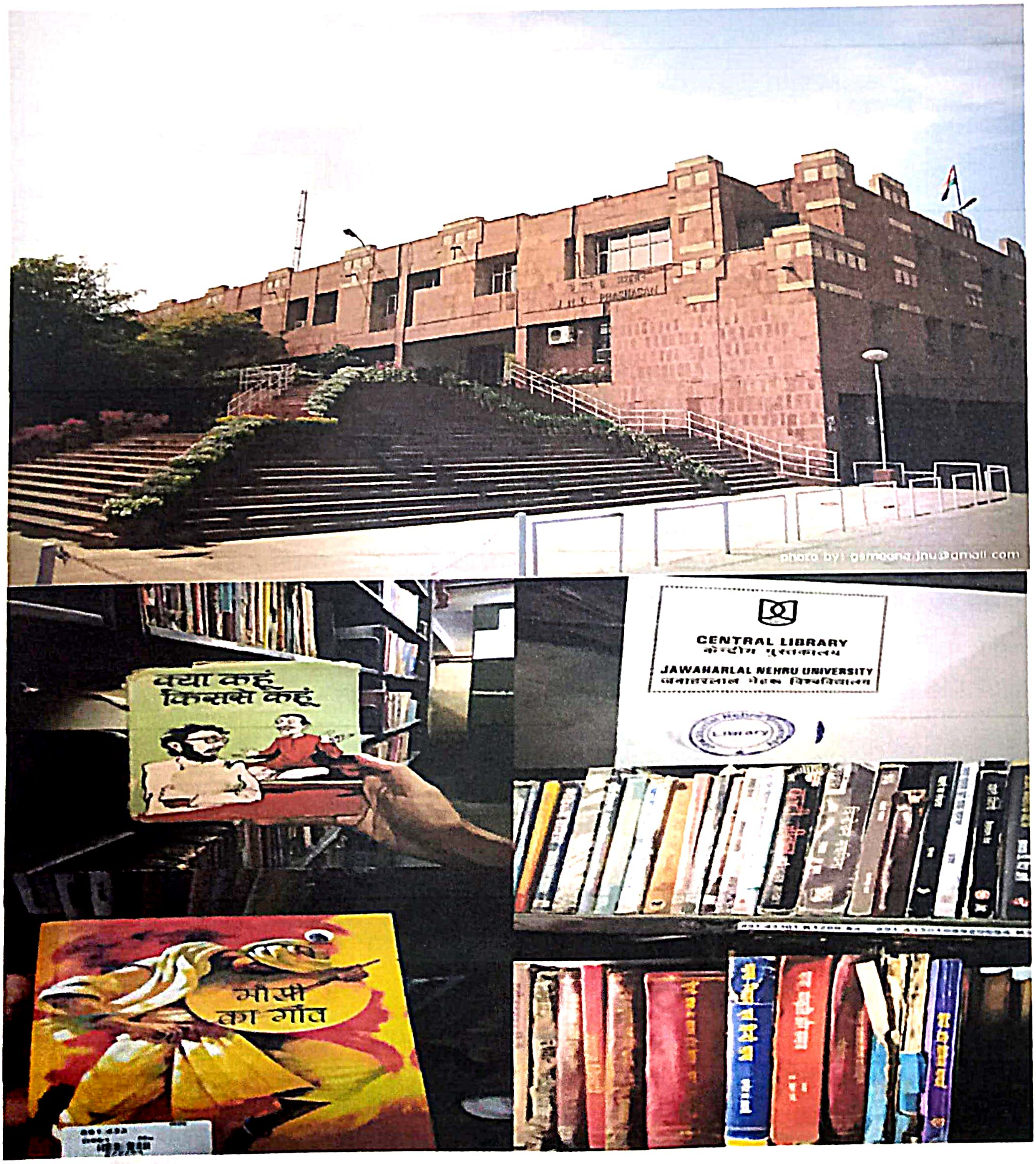

कुतुब मीनार

कुतुब मीनार हम शाम के समय पहुँच गये थे। कुतुब मीनार एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है और दिल्ली, भारत में सबसे प्रतिष्ठित स्मारकों में से एक है। टावर में कुरान की जटिल नक्काशी और शिलालेखों के साथ पांच मंजिलें हैं। यह पूरे इतिहास में भारत में इस्लामी शासन के एक महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में खड़ा है क्योंकि यह इस्लामी वास्तुकला की शक्ति और भव्यता का प्रमाण है और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाता है। कुतुब मीनार कुतुब मीनार परिसर में अलाउद्दीन खिलजी के मकबरे, कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद और लौह स्तंभ के साथ पाया जाता है।

वहाँ बहुत बड़ा और सुंदर बाग है। वहाँ पर तस्वीरें भी बहुत अच्छी आती है और कुतुब मीनार बहुत बड़ा है। कुतुब मीनार स्मारक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत के समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास और मुगल साम्राज्य के शासन का प्रतीक है। एक वास्तुशिल्प चमत्कार और भारत में सबसे पुराने जीवित स्मारकों में से एक, इस्लामी और हिंदू वास्तुकला शैलियों का एक अनूठा मिश्रण प्रदर्शित करता है।

इतिहास

दिल्ली की कुतुब मीनार एक पाँच मंजिला इमारत है जिसका निर्माण कई शासकों द्वारा चार शताब्दियों में किया गया था। इसे मूल रूप से कुतुब-उद-दीन ऐबक ने, जो दिल्ली सल्तनत का संस्थापक था, ११९२

के आसपास एक विजय मीनार के रूप में बनवाया था। मीनार का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है; उनके उत्तराधिकारी शम्स-उद-दीन इल्तुतमिश ने १२२० में संरचना में तीन और मंजिलें जोड़ीं । इसकी सबसे ऊपरी मंजिल को १३६९ में बिजली गिरने से क्षति पहुंची थी। इसका पुनर्निर्माण फ़िरोज़ शाह तुगलक ने किया था, जिन्होंने टॉवर में पाँचवीं और अंतिम मंजिल जोड़ी थी, जबकि कुतुब मीनार का प्रवेश द्वार शेर शाह सूरी द्वारा बनाया गया था ।

लगभग ३०० साल बाद, १८०३ में, एक भूकंप में टावर को फिर से गंभीर क्षति हुई। ब्रिटिश भारतीय सेना के एक सदस्य, मेजर रॉबर्ट स्मिथ ने १८२८ में संरचना की मरम्मत की। वह आगे बढ़े और पांचवीं मंजिल के ऊपर बैठने के लिए एक स्तंभयुक्त गुंबद स्थापित किया, इस प्रकार टावर को छठी मंजिल मिल गई। लेकिन इस अतिरिक्त कहानी को १८४८ में भारत के तत्कालीन गवर्नर-जनरल हेनरी हार्डिंग के आदेश के तहत हटा दिया गया और मीनार के बगल में पुनः स्थापित किया गया। १९८१ में एक दुर्घटना के बाद से टावर में प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया गया है, जिसमें इसके अंदर मौजूद ४७ लोगों की मौत हो गई थी

वास्तुकला

शानदार कुतुब मीनार की ऊंचाई ७३ मीटर है । इसका आधार व्यास १४.३ मीटर है जो शीर्ष पर २.७ मीटर तक सीमित हो जाता है।कुतुब मीनार एक शानदार संरचना है जिसमें नक्काशी, अलंकृत बालकनियाँ और विभिन्न भाषाओं और युगों के शिलालेख हैं। इसके फर्श एक सर्पिल सीढ़ी के माध्यम से जुड़े हुए हैं जिसमें ३७९ सीढ़ियाँ हैं। इसके अतिरिक्त, यह पहला मुस्लिम स्मारक है और इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का एक उदाहरण है, जिसमें वास्तुकला की भारतीय और इस्लामी दोनों शैलियों के तत्वों का संयोजन है। इसमें चार अलग-अलग मंजिलों वाला एक गोलाकार आधार है, प्रत्येक की अपनी वास्तुकला विशेषताएं हैं, जैसे चित्र, जालीदार खिड़कियां और नुकीले मेहराब जो प्राचीन भारतीय वास्तुकारों के कौशल को प्रदर्शित करते हैं।

बहुत अच्छी तरह से देखा फोटो निकले और बैठे थोड़ी देर और बाद में हम चले गए। यही पर हमारा यह दिन समाप्त होता है।

ताज महल

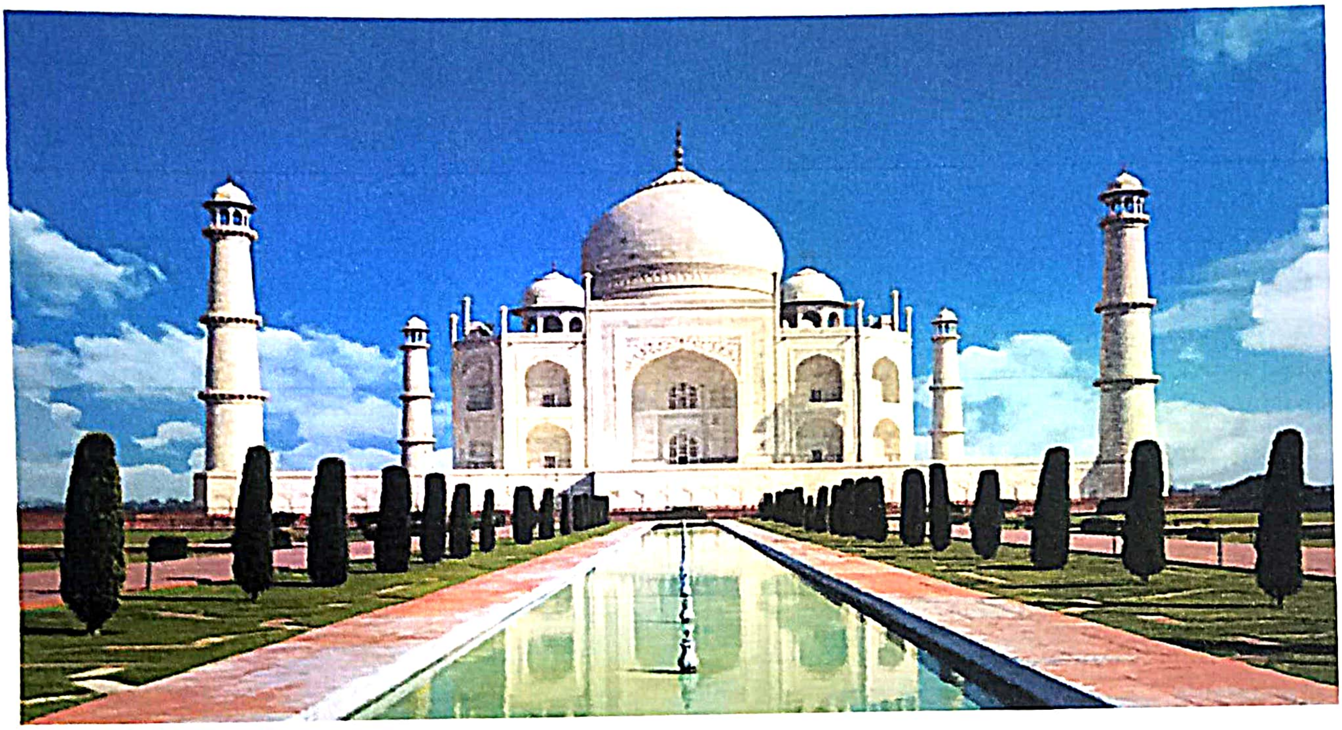

२२ मार्च २०२४ को सुबह ४:३० बजे हम बस से आगरा जाने के लिए निकले। लगभग हमें ४ घंटे आगरा पहुँचने के लिए लगे। बीच में हम नाश्ता करने के लिए भी रुके थे। उसके बाद हम सीधे ताजमहल गए। ताजमहल आगरा, उत्तर प्रदेश राज्य, भारत में स्थित है। ताजमहल आगरा शहर के बाहरी इलाके में यमुना नदी के दक्षिणी तट पर बना हुआ है। ताजमहल मुग़ल शासन की सबसे प्रसिद्ध स्मारक है। सफ़ेद संगमरमर की यह कृति संसार भर में प्रसिद्ध है और पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। ताजमहल विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है। ताजमहल एक महान् शासक का अपनी प्रिय रानी के प्रति प्रेम का अद्भुत शाहकार है। ताजमहल का सबसे मनमोहक और सुंदर दृश्य पूर्णिमा की रात को दिखाई देता है।

इतिहास

मुगल बादशाह शाहजहों ने ताजमहल को अपनी पत्नी अर्जुनंद बानो बेगम, जिन्हें मुमताज महल भी कहा जाता था, की याद में बनवाया था। ताजमहल को शाहजहों ने मुमताज महल की क़ब्र के ऊपर बनवाया था। मृत्यु के बाद शाहजहाँ को भी वहीं दफनाया गया। मुमताज महल के नाम पर ही इस मकबरे का नाम ताजमहल पड़ा। सन् १६१२ ई. में निकाह के बाद १६३१ में प्रसूति के दौरान बुरहानपुर में मृत्यु होने तक अर्जुमंद शाहजहाँ की अभिन्न संगिनी बनी रहीं। मुमताज महल के रहने के लिए दिवंगत रानी के नाम पर मुमताज़ा बाद बनाया गया, जिसे अब नाज गंज कहते है और यह भी इसके नज़दीक निर्मित किया गया था। ताजमहज मुगल वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। १९८३ ई. में ताजमहल को यूनेस्कों विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

वास्तुकला

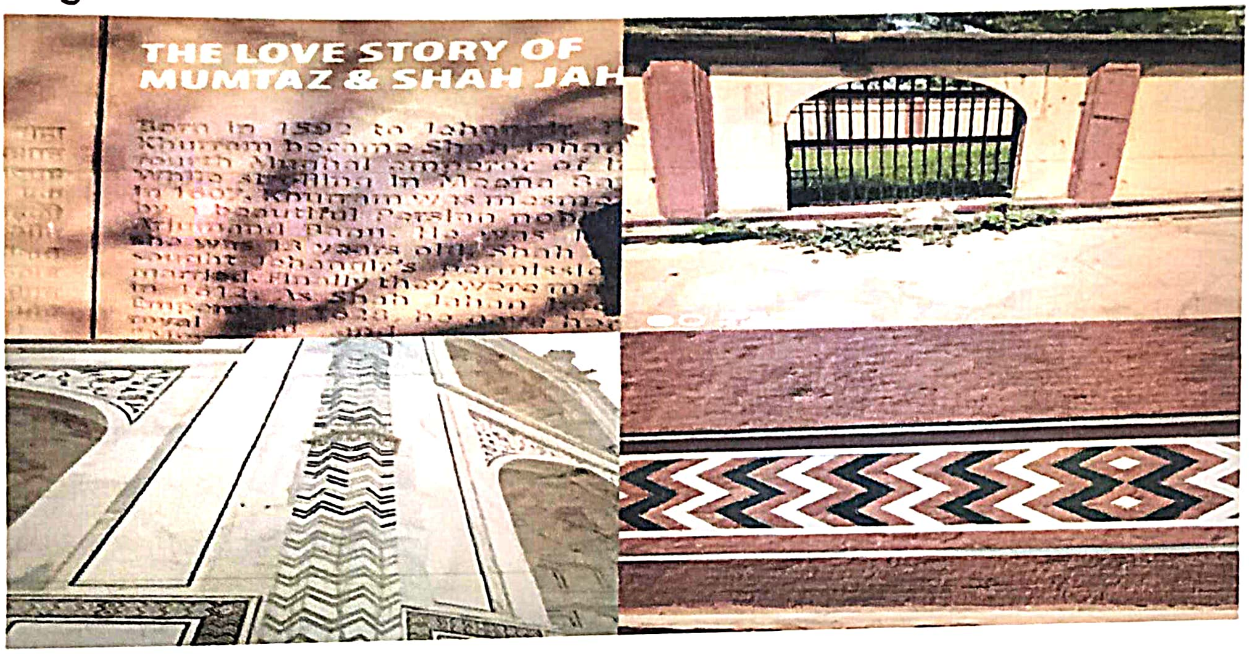

कला की सार्वभौमिक रूप से प्रशंसित उत्कृष्ट कृति, ताज महल में इस्लामी, फ़ारसी और भारतीय स्थापत्य शैली के तत्वों का मिश्रण है। यह स्मारक ४२ एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है, जो तीन तरफ से खस्ताहाल दीवारों और चौथी तरफ यमुना से घिरा है। इसका निर्माण राजस्थान से प्राप्त सफेद मकराना संगमरमर का उपयोग करके किया गया था। स्मारक की सुंदरता को बढ़ाने के लिए हजारों कीमती और अर्ध-कीमती रत्नों का भी उपयोग किया गया था।

ताज महल एक ऊँचे चौकोर चबूतरे पर खड़ा है जिसके चारों कोनों पर चार मीनारें खड़ी हैं। तहखाने वाली सममित इमारत में एक मेहराब के आकार का प्रवेश द्वार है जो एक विशाल गुंबद और फिनियल के नीचे स्थित है। मकबरे के मुख्य हॉल के अंदर, आप शाहजहाँ और मुमताज महल की नकली ताबूत देख सकते हैं। वास्तविक कब्रें निचले स्तर पर एक बंद कक्ष के अंदर स्थित हैं।

जहां स्मारक की बाहरी सजावट मुगल शिल्प कौशल की गवाही देती है, वहीं आंतरिक भाग भी उतना ही चमकदार है। अष्टकोणीय आकार के आंतरिक कक्ष में जालीदार बॉर्डरिंग और कब्रों पर कुरान के उद्धरण और जटिल सजावटी विवरण हैं, जिनमें बेल-बूटे, फूल और फल शामिल हैं, जो २८ प्रकार के कीमती और अर्ध-कीमती पत्थरों से सुसज्जित हैं। यद्यपि आधार और ताबूत को नाजुक ढंग से सजाया गया है, इस्लामी परंपरा को ध्यान में रखते हुए, जिन तहखानों में मुख्य शव रखे गए हैं वे सादे हैं।

ताज महल को बनाने में २२००० से अधिक कुशल कारीगर, मजदूर, चित्रकार, पत्थर काटने वाले और ३२ मिलियन रुपये की भारी रकम लगी थी। मकबरे के अलावा, ताज परिसर में एक मस्जिद, एक संग्रहालय, एक गेस्ट हाउस और सजावटी उद्यान हैं।

ताजमहल को देखकर ऐसा लगा की मैं वही रह लूँ। क्योंकि अंदर बहुत ही ठंड लग रही थी। ताजमहल में अंदर जाने के लिए पैरों को पहनने के लिए पोती देते है। ताजमहल के बारे में हमें सब जानकारी बतायी जो हमारे साथ गाइड था उसने बताया। ताजमहल के पास बहुत सारे फोटोग्राफर है और उससे हमने फोटो निकाले। पूरा ताजमहल अच्छे से देखा और बाद में निकल गए।

ताज महल गार्डन, आगरा

ताज ९८० वर्ग फुट के विशाल मुगल उद्यान या चारबाग से घिरा हुआ है। उभरे हुए रास्ते बगीचे को १६ धँसी हुई फूलों की क्यारियों में विभाजित करते हैं। मुख्य द्वार और मकबरे के बीच स्थित एक ऊंचा संगमरमर का पानी का टैंक पूरे स्थान की सुंदरता को बढ़ाता है। ताज गार्डन मूल रूप से प्रसिद्ध फ़ारसी उद्यानों पर आधारित थे। हालाँकि, जब औपनिवेशिक शासकों ने ताज पर कब्ज़ा कर लिया, तो उन्होंने बगीचे का परिदृश्य बदल दिया और इसे लंदन के लॉन जैसा बना दिया।

मथुरा

ताज महल से हम मथुरा गए। भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली मथुरा में भगवान श्री कृष्ण के ठीक जन्मस्थान पर एक सुंदर मंदिर है। मंदिर को मथुरा में श्री कृष्ण जन्मस्थान या कृष्ण जन्मभूमि मंदिर मथुरा या केशव देव मंदिर या केशव देव मंदिर के नाम से जाना जाता है। एक पवित्र मंदिर होने के कारण, दुनिया भर से तीर्थयात्री इस मंदिर में आते हैं।

मथुरा में उन दिनों मे होली चालू थी। और हमारा निसिब था की हम होली के त्यौहार मे मथुरा पहुँच गए। भगवान महा विष्णु के अवतार भगवान श्री कृष्ण का जन्म मथुरा की जेल में वासुदेव और देवकी के आठवें पुत्र के रूप में हुआ था। उनके अवतार का मुख्य उद्देश्य अपने मामा कंस को मारना और लोगों को उसके बुरे कर्मों से छुटकारा दिलाना था। मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मस्थान या मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर बिल्कुल इसी स्थान पर बना है। इस स्थल पर कई उत्खनन इस तथ्य की गवाही देते हैं। यह वैष्णवों या भगवान श्री कृष्ण के अनुयायियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान है।

मथुरा में श्री कृष्ण जन्मस्थान का इतिहास

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान श्री कृष्ण का जन्म उनके मामा कंस की जेल में हुआ था और ऐसा माना जाता है कि भगवान श्री कृष्ण के पोते, श्री वज्रनाभ ने लगभग ५००० साल पहले ठीक इसी स्थान पर इस मंदिर का निर्माण कराया था। यह मंदिर कई आक्रमणकारियों का शिकार रहा है जिन्होंने इतिहास में विभिन्न समय पर इसे नष्ट कर दिया और इसका पांच बार पुनर्निर्माण किया गया

है। ४०० ई. में, गुप्त सम्राट, चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के अधीन, मंदिर का दूसरी बार पुनर्निर्माण किया गया था। १६वीं शताब्दी में, इस मंदिर का दौरा वैष्णव संत, श्री चैतन्य महाप्रभु ने भी किया था। १६वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में दिल्ली पर शासन करने वाले सिकंदर लोदी ने इस मंदिर को फिर से नष्ट कर दिया।

यह चौथी बार था जब जहांगीर मुगल सम्राट थे, तब केशव देव मंदिर का पुनर्निर्माण ३.३ मिलियन रुपये की लागत से किया गया था। मध्य प्रदेश के ओरछा के राजा वीर सिंह बुंदेला ने ही १२५ साल बाद इस काम को अंजाम दिया था। लेकिन इस मंदिर को औरंगजेब ने 1669 ई. में नष्ट कर दिया था और मंदिर के स्थान पर जामी मस्जिद नामक एक मस्जिद का निर्माण कराया गया था। इस मंदिर की सामग्री का उपयोग करके मस्जिद का निर्माण किया गया था। १८०३ में अंग्रेजों ने मथुरा पर शासन करना शुरू किया और १८१५ में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा मंदिर क्षेत्र की नीलामी की गई और इसे बनारस के राजा, राजा पटनीमल ने खरीद लिया। लेकिन इस मंदिर के निर्माण की उनकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी।

यह स्वर्गीय महामना पंडित मदन मोहन मालवीय थे जिन्होंने स्वर्गीय सेठ जुगल किशोरजी बिड़ला की मदद से १९५१ में "श्री कृष्ण जन्म भूमि ट्रस्ट" की स्थापना की थी। निर्माण कार्य १५ अक्टूबर १९५३ को शुरू हुआ और फरवरी १९८२ में पूरा हुआ। इसमें शामिल लोगों के अथक प्रयासों के बिना इसे पूरा नहीं किया जा सकता था।

मथुरा में श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर के अंदर एक स्लैब वाली जेल जैसी संरचना है और ऐसा माना जाता है कि उस स्लैब पर ही भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। इस जगह को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती है। अपने पुराने दिनों में यह मंदिर आश्चर्यजनक था और इसकी स्थापत्य सुंदरता का वर्णन बिल्कुल भी नहीं किया जा सकता है।

मंदिर को तीन भागों में विभाजित किया गया है, अर्थात् गर्भ गृह - जन्म स्थान, केशवदेव और भागवत भवन। मंदिर के प्रवेश द्वार पर माँ योगमाया का मंदिर भी है। पिछले कुछ वर्षों में मंदिर में कई बदलाव हुए हैं और वर्तमान मंदिर हिंदू वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है।

सभी हिंदू भक्तों के लिए, मथुरा में श्री कृष्ण जन्मस्थान एक अवश्य देखने योग्य स्थान है। यह भगवान श्री कृष्ण का एक उत्कृष्ट एवं संरक्षित स्मारक है। भगवान श्री कृष्ण का जन्म स्थान होने के कारण, यह स्थान कड़ी सुरक्षा के अधीन है और मंदिर में प्रवेश करने वाले सभी लोगों की मंदिर के अंदर जाने से पहले जाँच की जाती है। एक पवित्र स्थान होने के कारण, किसी को भी मंदिर की तस्वीर लेने की अनुमति नहीं है, जो इसकी स्थापत्य सुंदरता को देखते हुए अफ़सोस की बात है। मंदिर का शांत और शांत वातावरण भगवान श्री कृष्ण की उपस्थिति का एहसास कराता है और मंदिर छोड़ने का बिल्कुल भी मन नहीं करता है। मथुरा में श्री कृष्ण जन्मस्थान मंदिर सभी हिंदुओं के लिए अवश्य जाना चाहिए जहां कोई भी भगवान श्री कृष्ण की उपस्थिति महसूस कर सकता हैं।

वृंदावन

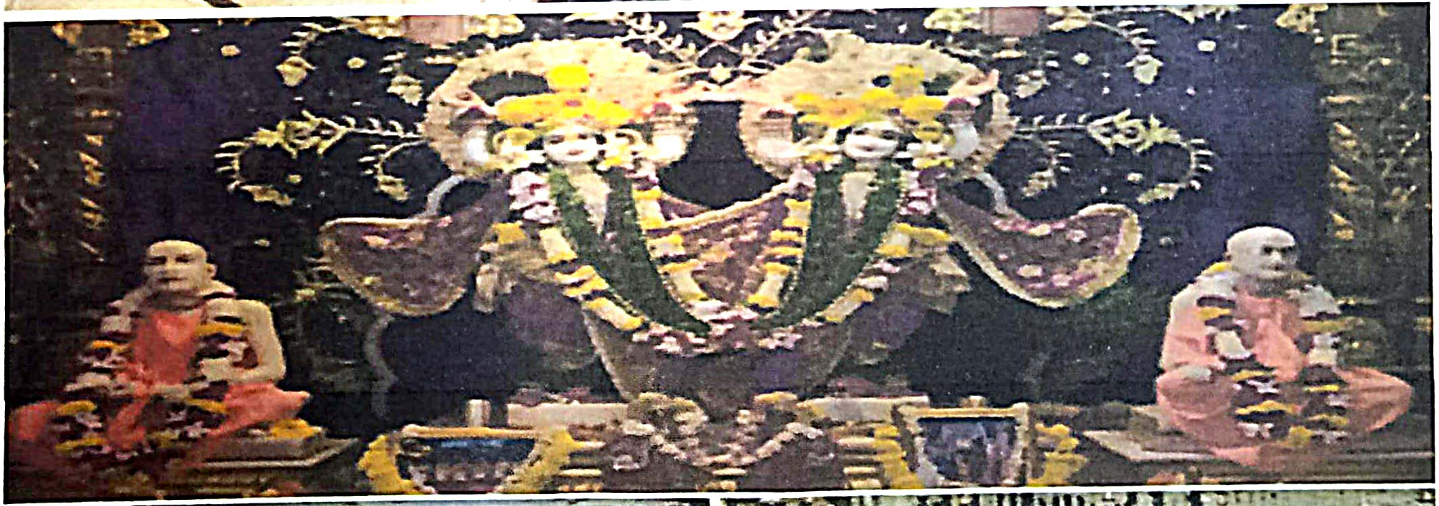

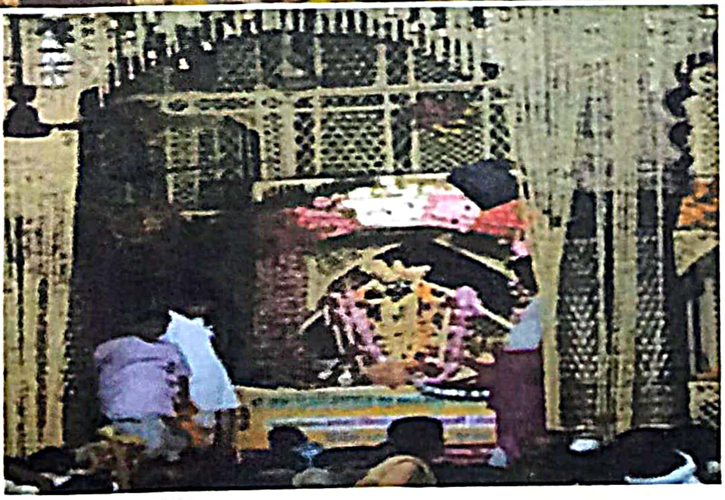

उग्रसेन की बावली

अगले दिन २४ मार्च २०२४ को हम सुबह चाय नाश्ता करके बस से घूमने के लिए निकले। उस दिन सबसे पहले हम उग्रसेन की बाउली देखने गए। वहाँ हम सुबह १० बजे पहुँच गए थे। अग्रसेन की बावली' दिल्ली में जंतर मंतर के निकट स्थित एक ऐतिहासिक इमारत है, जिसका निर्माण महाराजा अग्रसेन ने करवाया था। अग्रसेन की बावली भारत की राजधानी दिल्ली में 'जंतर मंतर' के निकट स्थित है, जो भारत सरकार द्वारा 'भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण' और अवशेष अधिनियम १९५८ के अतंर्गत संरक्षित है। महाभारत के पौराणिक पात्र एवं सूर्यवंशी राजा अग्रसेन ने इसका निर्माण करवाया था। यह बावली अभी भी बेहतर स्थिति में है।जंतर मंतर के निकट, हेली रोड पर यह बावली मौजूद है। यहाँ पर नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली के लोग कभी तैराकी सीखने के लिए आते थे।

इतिहास

इस बाउली का निर्माण अग्रोहा के महान राजा महाराजा अग्रसेन ने किया था। बावड़ी या बावली का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है। बाद में १४ वीं शताब्दी में इसका पुनर्निर्माण अग्रवाल समुदाय के लोगों ने किया, जो महाराजा अग्रसेन के वंशज माने जाते हैं। बावड़ी की स्थापत्य विशेषताओं से यह भी संकेत मिलता है कि इसका पुनर्निर्माण दिल्ली पर तुगलक वंश (१३१२ -१४१४) या लोधी वंश (१४५१ से १५२६) के शासनकाल के दौरान किया गया था।

उग्रसेन की बावली का निर्माण न केवल एक जलाशय के रूप में बल्कि एक सामुदायिक स्थान के रूप में भी किया गया था। ऐसा माना जाता है कि उस समय की महिलाएं इस कुएं पर इकट्ठा होती थीं और बावली का ठंडा माहौल उन्हें आराम करने और बाहर की चिलचिलाती गर्मी से दूर कुछ पल बिताने के लिए आदर्श स्थान प्रदान करता था। बावली के मेहराबदार कक्षों का उपयोग विभिन्न धार्मिक कार्यों और समारोहों के लिए भी किया जाता था।

वास्तुकला

इस बावली का निर्माण लाल बलुए पत्थर से हुआ है। अनगढ़ तथा गढ़े हुए पत्थर से निर्मित यह दिल्ली की बेहतरीन बावलियों में से एक है। क़रीब ६० मीटर लंबी और १५ मीटर ऊंची। १०८ सिड़ियाँ है ऐसा कहा जाता है। इस बावली के बारे में विश्वास है कि महाभारत काल में इसका निर्माण कराया गया था। बाद में अग्रवाल समाज ने इस बावली का जीर्णोद्धार कराया। यह दिल्ली की उन गिनी चुनी बावलियों में से एक है, जो अभी भी अच्छी स्थिति में हैं।

कुछ बाते

उग्रसेन की बाउली पर हमने फोटो खींचे, और हम सिड़ियों से नीचे गए थे देखने के लिए लेकिन फिर से उपर आते वक्त पसीना आ गया। दिखने मे बहुत कम सिड़ियाँ दिखती है लेकिन बहुत है। इस बावड़ी में 'पीके', 'झूम बराबर झूम' समेत कई बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है। यह दिल्ली की उन गिनी-चुनी बावलियों में से एक है, जो अभी भी अच्छी स्थिति में हैं। इसके स्थापत्य में 'व्हेल मछली की पीठ के समान' छत है।

राष्ट्रीय बाल भवन

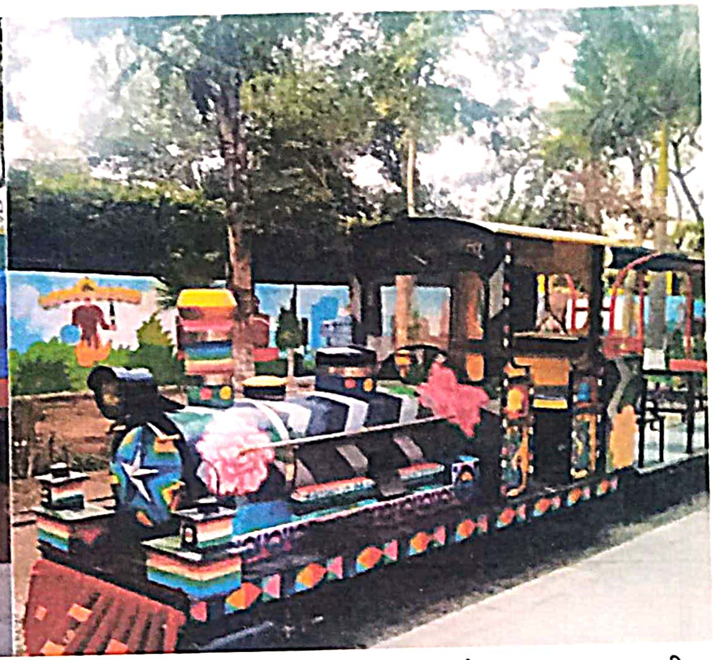

बाल भवन एक संस्था है जिसका उद्देश्य बच्चों को उनकी उम्र, योग्यता और क्षमता के अनुसार बातचीत करने, प्रयोग करने, निर्माण करने और प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न गतिविधियां, अवसर और सामान्य मंच प्रदान करके उनकी रचनात्मक क्षमता को बढ़ाना है। यह नवाचार की अपार संभावनाओं के साथ बिना किसी तनाव या तनाव के एक बाधा-मुक्त वातावरण प्रदान करता है।

यह ५ से १६ वर्ष की आयु के बच्चों को सेवा प्रदान करता है। यह भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय है। यह सोमवार, मंगलवार और राजपत्रित छुट्टियों पर बंद रहता है। काम का समय सुबह ९:०० बजे से शाम ५:३० बजे तक, दोपहर के भोजन का समय दोपहर १:०० बजे से दोपहर १:३० बजे तक है।

राष्ट्रीय बाल भवन मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्थान है, जिसका मुख्यालय ITO, नई दिल्ली में है। राष्ट्रीय बाल भवन एक ऐसी संस्था है, जिसका उद्देश्य बच्चों की रचनात्मक क्षमता को बढ़ाने के लिए उन्हें विभिन्न गतिविधियों, अवसरों और बातचीत के लिए सामान्य मंच प्रदान करना है। यह नवाचार की असीम संभावनाओं के साथ एक बाधा रहित वातावरण प्रदान करता है, किसी भी तनाव या तनाव को घटाता है। संग्रहालय में स्थायी दीर्घाएँ हैं जिनमें भारतीय परंपरा, इतिहास और कला के विभिन्न पहलुओं को प्राचीन सभ्यताओं, स्वतंत्रता संग्राम के साथ सिंधियों के अतीत के इतिहास पर मुख्य फोकस के साथ रखा गया है और डायरिया की एक श्रृंखला के माध्यम से पेश किया गया है। दिल्ली या कोटला मार्ग में राष्ट्रीय बाल संग्रहालय और एक पूर्ण आनंद है जो इसे एक शानदार जगह

बनाता है जहाँ बच्चे आकार विचारों रख सकते हैं। निकटतम मेट्रो स्टेशन मंडी हाउस है और अन्य विकल्प मार्ग पर चलने वाली बसों और टैक्सियों के साथ ऑटो रिक्शा हैं।

राजघाट

दिल्ली में यमुना नदी के पश्चिमी किनारे पर महात्मा गांधी की समाधि स्थित है। काले संगमरमर से बनी इस समाधि पर उनके अंतिम शब्द हे राम उद्धृत हैं। अब यह एक सुन्दर उद्यान का रूप ले चुका है। यहाँ पर सुन्दर फव्वारे और अनेक प्रकार के पेड़ लगे हुए हैं। यहाँ पास ही शांति वन में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु की समाधि भी है। भारत आने वाले विदेशी उच्चाधिकारी महात्मा गांधी को श्रद्धांजली देने के लिए राजघाट अवश्य आते हैं।

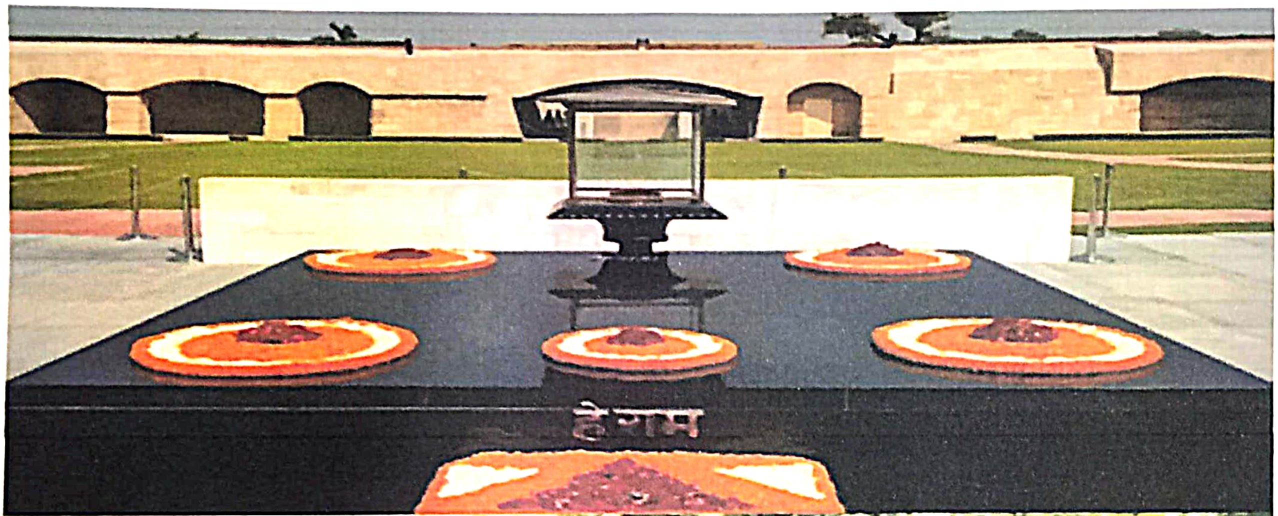

इतिहास

राजघाट जोकि महात्मा गांधी का स्मारक है। चार दीवारी वाले शहर का 'राजघाट द्वार', जो यमुना पर राजघाट पर खुलता था। अंततः, स्मारक क्षेत्र को राजघाट भी कहा जाने लगा। यहीं पर महात्मा गांधी का अंतिम संस्कार उनकी मृत्यु के एक दिन बाद 31 जनवरी, 1948 को किया गया था।

जामा मस्जिद

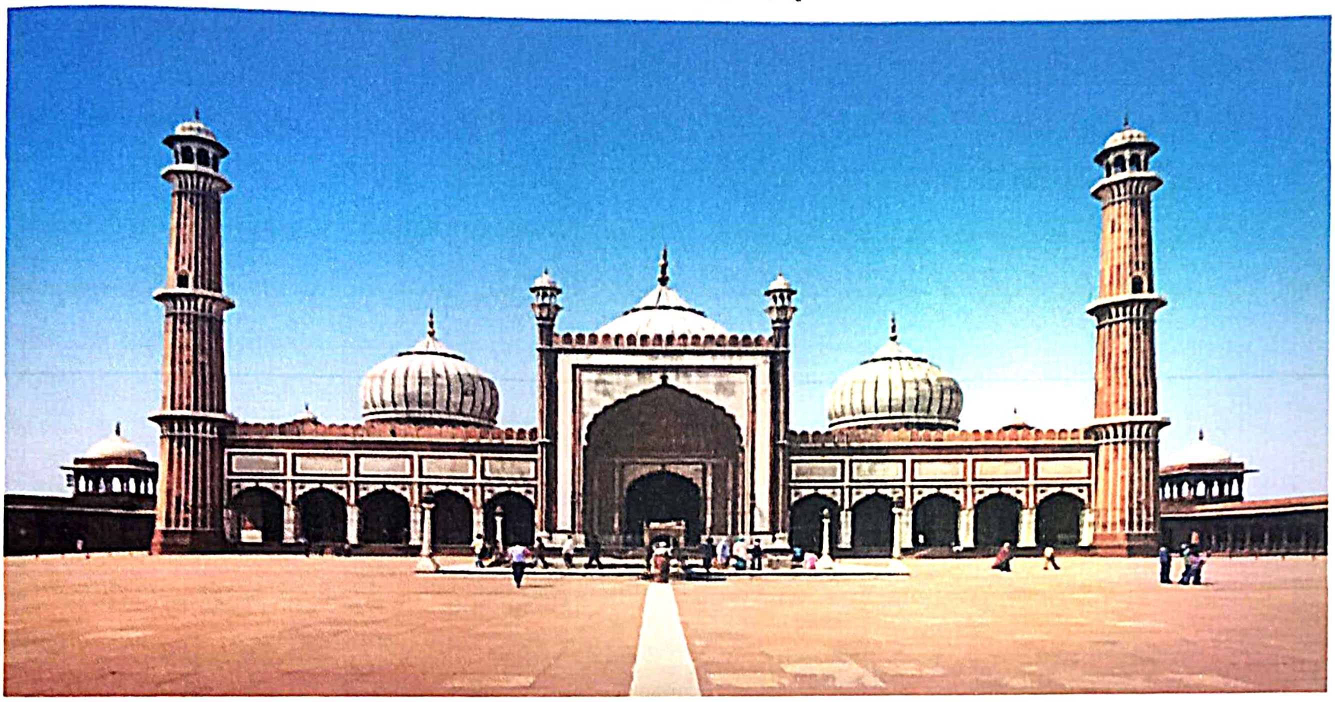

जामा मस्जिद दिल्ली दुनिया की सबसे बड़ी और संभवतया सबसे अधिक भव्य मस्जिद है। यह लाल क़िले के समाने वाली सड़क पर है। पुरानी दिल्ली की यह विशाल मस्जिद मुग़ल शासक शाहजहां के उत्कृष्ट वास्तुकलात्मक सौंदर्य बोध का नमूना है, जिसमें एक साथ २५००० लोग बैठ कर प्रार्थना कर सकते हैं। इस मस्जिद का माप ६५ मीटर लम्बा और ३५ मीटर चौड़ा है, इसके आंगन में १०० वर्ग मीटर का स्थान है। १६५६ में निर्मित यह मुग़ल धार्मिक श्रद्धा का एक विशिष्ट पुन: स्मारक है। इसके विशाल आंगन में हजारों भक्त एक साथ आकर प्रार्थना करते हैं। जामा मस्जिद लाल क़िले से ५०० मीटर की दूरी पर स्थित है।

मस्जिद-ए-जहानुमा

इसे मस्जिद - ए - जहानुमा भी कहते हैं, जिसका अर्थ है विश्व पर विजय दृष्टिकोण वाली मस्जिद। इसे बादशाह शाहजहां ने एक प्रधान मस्जिद के रूप में बनवाया था। एक सुंदर झरोखेनुमा दीवार इसे मुख्य सड़क से अलग करती है। पुरानी दिल्ली के प्राचीन कस्बे में स्थित यह स्मारक ५००० शिल्पकारों द्वारा बनाया गया था। यह भव्य संरचना भौ झाला पर टिकी है जो शाहजहांना बाद में मुग़ल राजधानी की दो पहाड़ियों में से एक है। इसके पूर्व में यह स्मारक लाल क़िले की ओर स्थित है और इसके चार प्रवेश द्वार हैं, चार स्तंभ और दो मीनारें हैं।

इतिहास जामा' शब्द 'जुम्मा' शब्द से लिया गया है, जो हर शुक्रवार को मुसलमानों द्वारा की जाने वाली सामूहिक प्रार्थना है। ऐतिहासिक इमारत का निर्माण १६५० के दशक में मुगल सम्राट शाहजहाँ द्वारा किया गया था। जी हां, वही शख्स जिसने प्यार की निशानी मशहूर ताजमहल बनवाया था। जो लोग नहीं

लाल किल्ला

दिल्ली में स्थित लाल किला, मुगलों की शानदार विरासत की कहानी कहता है। यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, बेहतरीन लाल बलुआ पत्थर से बनाया गया है। यह किला-ए-मुबारक के नाम से भी जाना जाता है। इसमें कई सुंदर महल, गुंबददार इमारतें और मस्जिदें है।

इतिहास

लाल किला किसी और ने नहीं बल्कि मुगल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी राजधानी शाहजहाँनाबाद के महल किले के रूप में बनवाया था। जब उन्होंने अपनी राजधानी को आगरा से दिल्ली स्थानांतरित करने का निर्णय लिया तो उन्होंने यमुना नदी के किनारे किले का निर्माण करवाया। 1638 में शुरू हुए निर्माण को पूरा होने में 8 साल से अधिक का समय लगा। इस संरचना का मूल नाम किला-ए-मुबारक था , जिसका अर्थ है 'धन्य किला'। तीन शताब्दियों से अधिक के अपने इतिहास के दौरान, किले पर औरंगजेब, जहांदार शाह, मुहम्मद शाह और बहादुर शाह द्वितीय सहित कई कब्जे हुए।

लाल किला 1739 में बड़े पैमाने पर नष्ट हो गया जब फारसी शासक नादिर शान ने शहर पर आक्रमण किया और मयूर सिंहासन सहित कई मूल्यवान कलाकृतियों को लूट लिया। बाद में, अंग्रेजों के खिलाफ 1857 के विद्रोह के दौरान किले की संगमरमर की संरचनाएं भी नष्ट हो गईं।

सरोजिनी नगर

सरोजिनी नाम सुनते ही हमारे मुँह पर हँसी आती है। हम सरोजिनी मार्केट में पहुँच गए थे तभी बारिश आयी। हम लगा अब यहा से ही वापस जाना पड़ेगा लेकिन नही बारिश कुछ समय बाद चली गयी तो हम शॉपिंग करने चले गए।

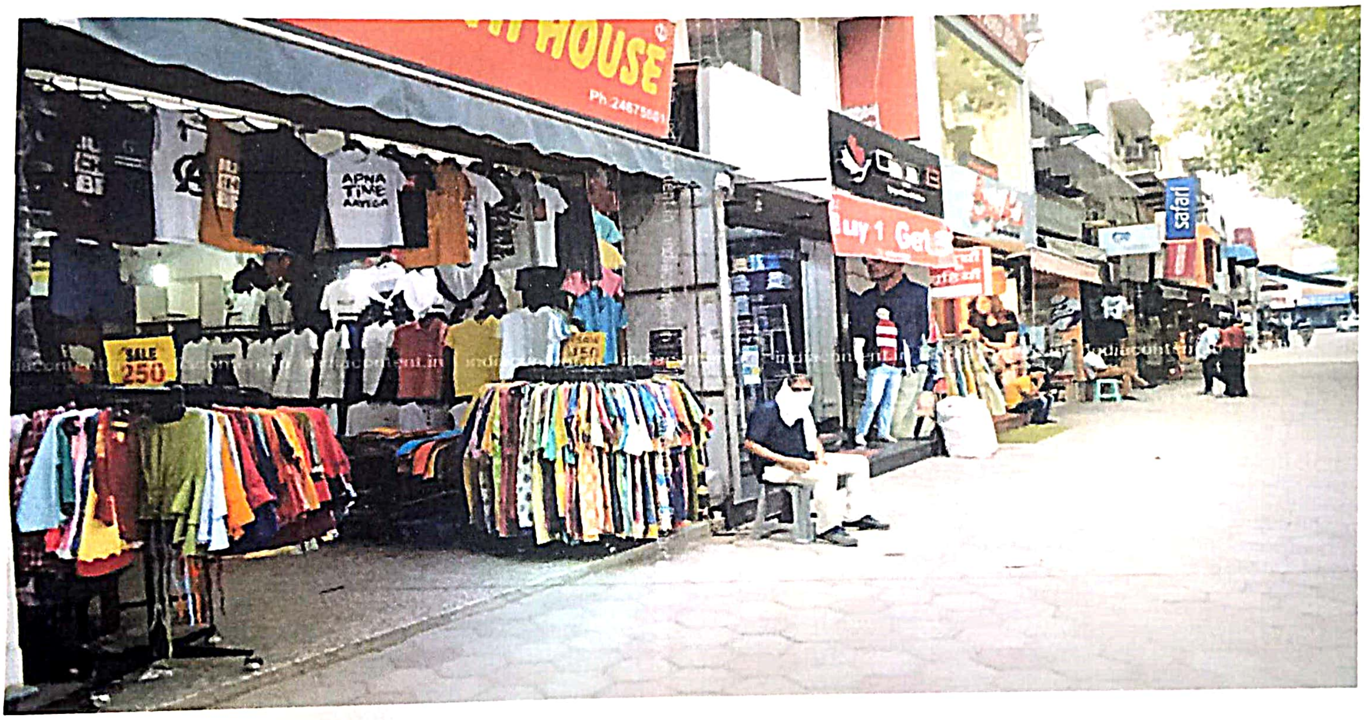

हमारे इस टूर का सबसे पसंदीदा जगह , जिसके बारे मे हम टूर पर जाने से पहले ही सोचने लगे थे आखिर वो पल वो दिन आगया। सरोजनी नगर मार्केट लड़कियों के लिए शॉपिंग का बहुत बड़ा हब सेंटर है। इतना ही नहीं ये कॉलेज स्टूडेंट से लेकर और महिलाओं का भी फेवरेट शॉपिंग डेस्टिनेशन है। इस मार्केट की खास बात यह है कि फैशन ब्रांड के महंगे कपड़े बहुत किफायती दामों में मिल जाते हैं। सरोजनी नगर मार्केट का नाम देश की जानी-मानी महिला स्वतंत्र सेनानी सरोजिनी नायडू के नाम पर रखा गया था। इसी वजह से यह मार्केट महिलाओं के शॉपिंग के लिए फेवरेट है। इस मार्केट में आपको कपड़े, बर्तन, क्रॉकरी और कटलरी इत्यादि समान बड़ी आसानी से मिल जाएगा। यहां हमेशा ही भीड-भाड़ देखने को मिलती है। यह मार्केट खाने-पीने के व्यंजनों के लिए भी काफी प्रसिद्ध है।

हम सब ने बहुत ही समान खरीदा। सब से ज्यादा समय मुझे लगता है हमने सरोजिनी मार्केट मे लागये है और बहुत देर तक घूमने के बाद भी हम लड़किया शॉपिंग करने के लिए नहीं थकती है। इस तरह से हमारा यह दिन समाप्त होता है। और यही पर हमारी यात्रा समाप्त होती है।

हम सुबह २५ मार्च २०२४ को घर जाने के लिए ट्रेन में बैठे और २६ मार्च २०२४ को सुबह ११ बजे मड़गाँव रेल्वे स्टेशन पर पहुँच गए।

निष्कर्ष

शैक्षणिक भ्रमण १८ मार्च २०२४ से २६ मार्च २०२४ तक रहा था जो हमारे शिक्षक प्रो. दीपक वरक सर एवं प्रो. श्वेता गोवेकर मैम के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। यह भ्रमण शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक रहा।

इस यात्रा की यह विशेषता है कि यात्रा के हमे अलग अलग जगहों पर अलग अलग लोगों को जानने और वहा के स्थानीय वातावरण से परिचित होने का मौका मिला।

इस शैक्षणिक यात्रा के पहले हमारा ज्ञान पुस्तकों पर आधारित था किन्तु इस यात्रा के पश्चात् हम सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक ज्ञान के बीच का अंतर समझ सके। जब हम किसी चीज को नज़दीक से देखते है तो वह ज्यादा हमपर असर करता है।

अतः यह कहना बिल्कुल सार्थक है कि सर्वप्रथम शिक्षा वही है जो हमारे अनुभव से प्राप्त होता है तथा ऐसे अनुभवों के लिए भ्रमण एकमात्र साधन है।